

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा: एक ऐतिहासिक परिचय

स्थापित ता. 19 अक्टूबर, 1897
शताब्दी समारोह
19 अक्टूबर, 1997
पंजी. संख्या : 1350/1982-1983
नवीनीकरण संख्या : 1910-2014-2015
क्षत्रिय महासभा
संपूर्ण भारत की एकमात्र प्राचीन संस्था

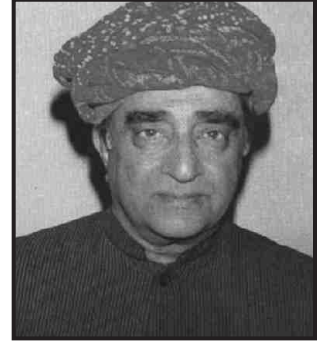
केन्द्रीय कार्यालय : बेला शक्ति सती मन्दिर, बेला का चौखम्बा,
क्षत्रिय सभा भवन, झण्डेवालान एक्स, ई-ब्लॉक,
अनारकली मार्किट, मेट्रो पिल्लर नं. 47 के सामने, न्यू लिंक रोड, नई दिल्ली-110055

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा एक ऐतिहासिक परिचय

संकलनकर्ता :

श्री महेन्द्र सिंह तंवर
कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष

अक्षुण्ण रखना है यदि निज वर्ण के अभिमान को



अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के संस्थापक माननीय राजा सा. स्व. बलवन्त सिंह व उनके साथी क्षत्रिय बंधुओं ने 119 वर्ष पूर्व जब इसकी स्थापना की थी तो वे निश्चित ही यह जानते थे कि क्षत्रिय समाज अपने वर्णानुसार धर्माचरण अर्थात् क्षत्रिय वर्ण का जो गुण-स्वभाव बताया गया है उसके अनुसार आचरण करेगा तो समाज, राष्ट्र और यहां तक कि अखिल विश्व में भी सर्वाधिक सम्मान का अधिकारी हो जाएगा। हमारे पौराणिक व ऐतिहासिक ग्रन्थ इसी तथ्य को प्रमाणित करते हैं – राम, कृष्ण, भगवान, बुद्ध, महावीर स्वामी, गुरुगोविन्द सिंह के नाम इस के लिए उल्लेखित करना पर्याप्त होगा। आज की विषम परिस्थितियों में तो अब यह और भी आवश्यक हो गया है कि हम क्षत्रिय समाज को उसके स्वभावगत – जन्मजात गुणों का स्मरण करायें – क्योंकि –

**अक्षुण्ण रखना है यदि निज वर्ण के अभिमान को, भारत हमारा विश्व में फिर पाए खोए मान को
स्मरण सदा रखना विवेकानन्द के आह्वान को, “उत्तिष्ठत-जागृत प्राप्य वरान्निबोधत्”
स – अधिकार, तुम प्राप्त करो आज उस सम्मान को।।**

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा स्वयं और संबंधित संगठनों के माध्यम से सतत् सारे राष्ट्र में यही अलख जगाने का प्रयत्न करती आ रही है।

संगठन के समक्ष अनेकों विचार-अनेकों योजनाएँ प्रस्तुत की जाती हैं निश्चय ही उन के पीछे क्षत्रिय समाज के उज्ज्वल भविष्य की कामना होती है परन्तु मेरी अपना प्रथम प्रयास यही है कि जब तक व्यक्ति में उच्च भविष्य की कामना होती है परन्तु मेरा अपना प्रथम प्रयास यही है कि जब तक व्यक्ति में उच्च चारित्रिक गुणों का विकास नहीं होता है तब तक अच्छे से अच्छा विचार या योजना भी क्रियाविन्वत नहीं हो पाती है और यदि किसी तरह प्रारंभ हो भी जाए तो अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाती है।

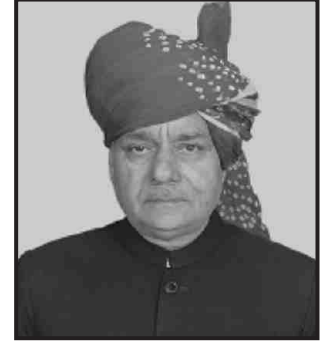
अतः मेरा तो सभी क्षत्रिय बंधुओं से एक ही आग्रह है कि स्वयं भी क्षत्रिय वर्णानुसार धर्माचरण पर चलें और अपनी भावी पीढ़ी को भी क्षत्रिय समाज की बलिदानी परंपराओं और गौरव गाथाओं का ज्ञान अवश्य कराएँ ताकि उनमें भी अपने वर्ण के प्रति अभिमान जागृत हो और वे भी सत्यनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ और सच्चे राष्ट्रभक्त बनें – जब ऐसा होगा तो हम जिन योजनाओं और विचारों के माध्यम से अपने समाज को सबल समर्थ, समृद्ध करना चाहते हैं – उनका भी क्रियान्वन उचित रूप में होगा तथा वांछित सुपरिणाम भी शीघ्र प्राप्त होंगे।

दिग्विजय सिंह वाकानेर

पूर्व केन्द्रीय मंत्री

राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा

Message



Jai Mata Ki to all Rajput Brothers

Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha has the vision to promote the Rajput leadership across the world aiming at improving the social, economic, educational status of Rajputs by uniting them. The main motto of ABKM is to attach our upcoming generation to our roots so that they preserve our rich heritage.

Rajputs are always true to their words, they have been sacrificing themselves to keep their words. We never practice deceit. We are the most honest people respected by society for our qualities. We are proud to say that we are most self respecting people. Maharana Pratap, our great legendary hero preferred to be homeless but did not yield before Mughal ruler. We are the live examples of heroism and chivalry. Our Rajput women are also of a very high character. In order to save their honour, they willingly burnt themselves alive. They were also great warriors like menfolk and whenever there was necessity, they went to battlefield like their great warrior. The practice of jauhar and saka was followed only in rajput communities.

I would like to pen up a quote of Lt. Col. James Tod from his book Annals and Antiquities of Rajasthan, which has filled our heart with pride;


"The Rajput race is the noblest and proudest in India, they are of highest antiquity and purest descent, they have a military autocracy of a feudal type, and "brave and chivalrous, keenly sensitive to an affront, and especially zealous of the honour of their women."

Today we are proud of their lineage and tradition. So let us march like torch bearer for our future generations to show them the way. Let's try to eradicate the social evils present in our community which are the reason of our downfall and unite and march ahead for the bright future of Rajputana.

Let's keep heroism, power, determination, generosity, and leadership as our identity.

With kind regards
Mahender Singh Tanwar
National Working President, ABKM

संख्या 519
27/08/2014



सोसाइटी के नवीनीकरण का प्रमाण – पत्र

नवीकरण संख्या 1910-2014-2015

फाइल संख्या 1-72452

एतद्वारा प्रमाणित किया जाता है कि क्षत्रिय महासभा

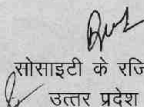
224, महात्मा गांधी रोड, लखनऊ कैंन्ट, लखनऊ।

को दिये गये रजिस्ट्रीकरण प्रमाण – पत्र संख्या 1350/1982-1983


दिनांक 28/08/1982 को दिनांक 24/08/2014 से पांच वर्ष की अवधि के लिए नवीकृत किया गया है।

1000 रुपये की नवीकरण फीस सम्यक् रूप से प्राप्त हो गयी है।

दिनांक 26/08/2014


सोसाइटी के रजिस्ट्रार,
उत्तर प्रदेश।

संख्या 6106
12.04-2010



सोसाइटी के नवीनीकरण का प्रमाण – पत्र

नवीकरण संख्या 2261-2009-2010

फाइल संख्या 1-72452

एतद्वारा प्रमाणित किया जाता है कि क्षत्रिय महासभा

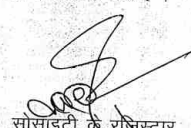
224, महात्मा गांधी रोड, लखनऊ कैंन्ट, लखनऊ।

को दिये गये रजिस्ट्रीकरण प्रमाण – पत्र संख्या 1350/1982-83

दिनांक 28/08/1982 को दिनांक 24/08/2009 से पांच वर्ष की अवधि के लिए नवीकृत किया गया है।

260 रुपये की नवीकरण फीस सम्यक् रूप से प्राप्त हो गयी है।

दिनांक 23/11/2009


सोसाइटी के रजिस्ट्रार,
उत्तर प्रदेश।

सदस्यता एवं जानकारी हेतु सम्पर्क करें :-

महाराजा डॉ० दिग्विजय सिंह वांकानेर

राष्ट्रीय अध्यक्ष
(गुजरात), मो : 94264 81222

अनिल सिंह चंदेल

राष्ट्रीय महामंत्री
उज्जैन(म.प्र.), मो : 98270 67200

महेन्द्र सिंह तंवर

राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष
कुरुक्षेत्र (हरियाणा), मो : 94169 50591

आर. एन. सिंह

राष्ट्रीय महामंत्री
कानपुर (उ.प्र.), मो : 94151 34600

Website : www.akhilbhartiyakshatriyamahasabha.com

Blog : akhilbhartiyakshatriyamahasabha.blogspot.in

Face Book Page : AkhilbhartiyaKshatriyaMahasabha

“एक ऐतिहासिक परिचय”

क्षत्रिय महासभा तदर्थनाम अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा

स्थापना – 1857 “राम दल” 1861 ‘क्षत्रिय हितकारणीय सभा’ 19-अक्तूबर 1897, लखनऊ, पंजीकरण संख्या 180/1530/1897/2150/86/661/96/75/01

संक्षिप्त उद्भव इतिहास

अंग्रेजी शासन काल में, प्रथम स्वतंत्रता संग्राम अंग्रेजों द्वारा क्षत्रियों के विरुद्ध अपनाई गई कलुषित नीति के विरुद्ध, विदेशी दासता से मुक्ति पाने के लिए एक खुली अघोषित क्रान्ति थी। जिसका प्रमुख केन्द्र बिन्दु उत्तर भारत था। प्रारम्भ में इसके सूत्रपात के दो प्रमुख स्रोत ‘सैनिक क्रान्ति’ और ‘जन-क्रान्ति’ थे। इसके सूत्रपात का बेड़ा प्रारम्भ में उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, दिल्ली, पंजाब (वर्तमान हरियाणा) व आन्ध्रप्रदेश के उत्पीड़ित क्षत्रिय शासकों और मुसलमान सरदारों ने उठाया। यह क्षत्रिय मुस्लिम एकता का अद्भुत संगम था। संयुक्त प्रान्त, आगरा और अवध में, अवध की बेगमों, बनारस के राजा चेत सिंह की फांसी, रुहेल खंड के क्षत्रिय सरदारों के प्रति ईस्ट इंडिया कम्पनी की उपेक्षा पूर्ण नीति और दिल्ली के अन्तिम मुगल शासक बहादुर शाह ज़फर के दो बेटों को दिल्ली में बीच सड़क पर खड़ा करके गोली मारने की घटना ने आग में घी डालने का काम किया, साथ ही क्षत्रिय राजाओं को गोद लेने की प्रथा को समाप्त करने की लार्ड डलहौजी की घोषणा ने भीषण जन क्रान्ति को जन्म दिया।

परिणामतः मुगल शासक बहादुर शाह जफर के झंडे के नेतृत्व में बेगम हज़रत महल, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, बाजीराव पेशवा, अवध के राजा बेनी माधव सिंह, राव राम बख्श सिंह बैसवारा वीर, डा. वीर कुवंर सिंह बिहार, दरियाव सिंह खागा, राजा नरपति सिंह हरदोई, शिवरतन सिंह हिस्था सेमरी बिहार, गालब सिंह अलुरी, सीता राम राजू आन्ध्रप्रदेश व रानी निडाल नागालैंड आदि ने क्रान्ति कर लाखों क्रान्तिकारियों के साथ क्रान्ति की ज्वाला को प्रज्वलित कर दिया।

इसी अन्तराल में मझौली-गोडत्रा के दत्तक पुत्र राजा देवी बख्श सिंह, कालाकांकर के राजा हनुमन्त सिंह, प्रताप सिंह, माधो सिंह अवध के राजा बेनी माधव सिंह, दरियाव सिंह, बाबू सहलन सिंह, जोधराज सिंह, खीरी आदि राजाओं ने बेगम हज़रत महल के योगदान से कालाकांकर के गंगा पुलिन पर ‘रामदल’ का 16 मई 1857 में गठन किया। जिस का प्रतीक चिह्न था ‘श्री राम के चिह्न के साथ लाल कमल का फूल’ और जिसके प्रचार तंत्र में योगी और संन्यासी भी घर-घर जा कर क्रान्ति का प्रचार-प्रसार कर रहे थे। अंग्रेजों के शासन में अवध में जो व्यक्ति लगान न अदाकर पा रहे थे, उनकी जमीन बेच दी गई। इस कठोरता ने जनक्रान्ति को वीभत्स रूप दिया। इसी अन्तराल में अंग्रेजों द्वारा प्रदत्त बन्दूकों की गोलियों में गाय और सूअर की चर्बियों के लगाने से हिन्दू और मुस्लिम सैनिकों में धार्मिक उन्माद ने क्रान्ति के रूप में जन्म लिया। क्रान्ति के लिए निर्धारित तिथि 31 मई 1857 थी पर इसके पूर्व ही 26 फरवरी 1857 को सैनिक छावनी बहरामपुर में

विद्रोह हुआ पर उसे दबा दिया गया । 31 मार्च 1857 में मंगल पांडेय ने विद्रोह कर दिया । उसने लेफ्टिनेंट कर्नल को गोली मारी । पुनः स्वयं को गोली मारी पर बच गया । 18 अप्रैल 1857 को बैरकपुर में उसे फांसी दी गई । अतः अंग्रेजों ने 34वीं बटालियन को भंग कर दिया । 24 अप्रैल 1857 को घुड़सवार सेना ने भी विद्रोह कर दिया । 10 मई 1857 को मेरठ छावनी की तीन पलटनों ने विद्रोह कर दिया, अपने अफसरों को गोली से उड़ा दिया, जेलों के फाटक तोड़ दिये, कैदियों को मुक्त कर दिया । बंगाल रेजीमेंट ने भी विद्रोह कर दिया । 7 अगस्त 1857 को चीफ कमिश्नर लखनऊ गवर्नर जनरल को लिखता है, "वैसबाड़ा क्षेत्र ब्रिटिश फौज की नर्सरी थी, जहां 40000 (चालीस हजार) से अधिक क्षत्रिय सेना में काम कर रहे थे । करीब 30000 (तीस हजार) पेंशन पा रहे थे । इन्हें युद्ध का अनुभव था । वे राजाओं की क्रान्ति सेनाओं में भर्ती हो गये । नवाब रुहेल खंड की सेना में 75000 (पचहत्तर हजार) वैस राजपूत सैनिक, वैसबाड़ा के राजा बेनी माधव की फौज में 35000 (पैंतीस हजार) सैनिक थे । वैसबाड़ा के हर परिवार से हर एक व्यक्ति उनकी सेना का अंग था । बिहार के वीर कुंवर सिंह की सेना में 65000 (पैंसठ हजार) विद्रोही सैनिक शामिल थे ।

यह एक महान क्रान्ति थी या प्रलय । अंग्रेज गरीब भारतीयों को धन के लालच से ईसाई बना रहे थे और इसी काल में कुछ क्षत्रिय राजाओं, नवाबों और मुस्लिमानों के अत्याचारों से पीड़ित थे । वे परोक्ष रूप में अंग्रेजों से मिले रहे, जिससे उनको सामाजिक उपेक्षा का शिकार तो होना ही पड़ा, पर इसे क्षत्रिय समाज ने क्षत्रियों को लामबन्द करके इस बलि वेदी पर एक सूत्र में बाँधने की आवश्यकता का अनुभव किया । कालाकांकर प्रतापगढ़ के राजा हनुमन्त सिंह के नेतृत्व में गंगा—जमुनी क्रान्ति के प्रवाह में 'राम दल' नाम के संघ ने गोपनीय ढंग से क्लब के रूप में क्षत्रिय महासभा के सूत्रपात को जन्म दिया ।

क्रान्ति की चिंगारी ने वीभत्स रूप धारण किया । अनेक अंग्रेज गाजर—मूली की तरह काट डाले गए, पर आर्थिक अभाव तथा अंग्रेजों से कतिपय भारतीयों के मिले रहने से सफलताओं को असफलता की चादर ने आच्छादित कर लिया । सैकड़ों क्रान्तिकारी शहीद हुए । कुछ को गोली और बारूद से उड़ा दिया गया । गाँव के गाँव जला दिये गये । सैकड़ों क्रान्तिकारियों को सरेआम पेड़ों पर लटका कर फांसी दी गई, फिर उनके निर्जीव शरीर को गोली से उड़ाकर सगीनों से बेध दिया गया । आगरा और अवध को अंग्रेजी शासन में मिला लिया गया । क्रान्तिकारियों के राज्यों को उपहार में गद्दारों को बाँट दिया गया ।

क्रान्ति की असफलता के इस सोपान पर क्षत्रियों ने 'राम दल' को विघटित कर उसके स्थान पर 1860 में 'क्षत्रिय हितकारिणी सभा' का गठन किया पर यह राजाओं, राजदरबारियों और उनके सहयोगियों का संगठन आम बनकर रह गया । जिसका कार्यक्षेत्र उत्तर प्रदेश, प्रतापगढ़, गोरखपुर, आजमगढ़, बलिया, रायबरेली, उन्नाव, आगरा, मथुरा, हरदोई, मैनपुरी, गोंडा तथा मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, बंगाल, जम्मू कश्मीर, पंजाब (वर्तमान हरियाणा) आदि तक सीमित था । जिसके सरपरस्त अंग्रेजों के शुभ चिन्तक थे । इस कारण इससे क्रान्तिकारियों के परिवारों द्वारा प्रायः दूरी बना कर रखी गई ।

कालाकांकर जन्मी 'क्षत्रिय हितकारिणीय सभा' ने कालान्तर में आगरा और अवध के नाम को परिवर्तित कर संयुक्त प्रान्त आगरा और अवध के नाम से पंजीकृत किया। आवागढ़ एटा के राजा श्री बलवन्त सिंह के नेतृत्व में तत्काल समिति के प्रतिनिधि ठाकुर उमराव सिंह कोटला, राजा उदय प्रताप सिंह भिनगा (उत्तर प्रदेश), राजा श्री खडक बहादुर सिंह मझौली (बिहार), श्री राम दीन सिंह तथा राजा मल्ल तथा अन्य क्षत्रियों ने "क्षत्रिय हितकारिणी सभा" को बदलकर इसका पुनः नामकरण "क्षत्रिय महासभा" रखा।

इसी अन्तराल में संयुक्त प्रांत आगरा और अवध के प्रदेश 19 अक्टूबर 1897 में भारतीय सोसाइटी अधिनियम के अर्न्तगत राजधानी लखनऊ (लक्ष्मणपुर) अवध में सभा का पंजीकरण हुआ। अतः राजा बलवन्त सिंह आवागढ़ एटा ने संयुक्त प्रान्त आगरा और अवध को जनक के रूप में अध्यक्ष निर्वाचित कर इस का पंजीकृत कार्यालय 224 महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ कैन्ट, उत्तर प्रदेश तथा प्रधान कार्यालय मथुरा, संयुक्त प्रान्त आगरा और अवध में रखा गया।

कालान्तर में 09.11.1986 में महाराजा लक्ष्मण सिंह डुंगरपुर के अध्यक्षताकाल में और कोक सिंह भदोरिया, राष्ट्रीय महामंत्री के समय में 'क्षत्रिय महासभा' यह सभा भारत में 'अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा' के रूप में सम्बोधित होगी, के नाम से पुनरावृत्ति की गई।

कालान्तर में इस महासभा में प्रजातान्त्रिक पद्धति से श्रृंखलाबद्ध रूप में क्रमशः अध्यक्षों का चयन किया गया। 19 अक्टूबर 1897 से 16 अप्रैल 2010 ई. तक क्रमवार अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के पीठासन अध्यक्षों का विवरण अधोलिखित रूप में प्रस्तुत है:—

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा संगठन की स्थापना :

इस संगठन को बनाने के लिए तीन महान महापुरुषों स्व. राजा बलवन्त सिंह जी आवागढ़, जादौन राजपूत रियासत जिला एँटा, ठाकुर उमराव सिंह जी कोटला जादौन राजपूत रियासत जिला फिरोजाबाद (पूर्व में जिला आगरा के अंतर्गत) एवं स्वर्गीय राजा उदय प्रताप सिंह जी भिंगा बिसेन राजपूत रियासत, जिला बहराइच उत्तर प्रदेश को शत शत नमन।

देश के इतिहास में अंग्रेजी हुकूमत होते हुए भी पहली बार इन तीनों राजाओं ने अपने साहस का परिचय देते हुए उन विषम परिस्थितियों में क्षत्रियों, राजपूतों के सामाजिक, शैक्षणिक विकास एवं उनकी समस्याओं के निराकरण के लिये इस संगठन 'अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा' का निर्माण किया और 19 अक्टूबर 1897 को राजा बलवन्त सिंह जी आवागढ़ के नेतृत्व में पंजीकरण करवाया गया। जिसके संस्थापक एवं प्रथम अध्यक्ष राजा बलवन्त सिंह आवागढ़ बनाये गये। उस अंग्रेजी हुकूमत में बड़े बड़े राजा व महाराज कोई संगठन बनाने का साहस भी नहीं कर पाते थे, जिस समय इन्होंने राजपूतों के शैक्षणिक विकास व सामाजिक उत्थान के लिये इस संगठन को बनाया और उसका प्रचार प्रसार करके क्षत्रियों में शिक्षा व सामाजिक उत्थान के लिए जागृति अभियान चलाया। यह बड़े हर्ष एवं स्वाभिमान का विषय है कि उन तीन महापुरुषों के द्वारा बनाया गया क्षत्रियों का संगठन 'अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा' आज इतने बड़े वट वृक्ष का रूप

ले चुका है कि देश के सभी प्रान्तों के जिलों में यह संगठन विद्यमान है और राजपूत हितों के लिये कार्य कर रहा है । उन महान पुरुषों में कितनी उच्च कोटि की सोच थी कि राजपूत समाज के विकास के लिये व समाज के सामाजिक विकास के अलावा शैक्षणिक विकास के लिए अपना महान योगदान भी दिया । जिसे आज हमारा समाज राजा बलवन्त सिंह महाविद्यालय, आगरा और उदय प्रताप कॉलेज, बनारस के रूप में देख रहा है और उसका समाज ने लाभ भी लिया है जिसके लिये क्षत्रिय समाज उनका हमेशा ऋणी भी रहेगा । अधिकांश देश के पुराने शिक्षित राजपूत इन्हीं दोनों कॉलेजों के पढ़े हुए हैं । इन महाविद्यालयों का राजपूतों के शैक्षणिक विकास में आज भी योगदान है ।

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा की प्रथम सभा आगरा में ठाकुर उमराव सिंह जी और उनके छोटे भाई नौनिहाल सिंह जी की कोठी बाघ फरजाना, जिसको बाद में राजपूत बोर्डिंग हाउस का नाम दिया गया, में सम्पन्न हुई थी । 20 जनवरी 1898 को राजा बलवंत सिंह जी, राजा उदय प्रताप सिंह जी भिनगा और कोटला के राजा उमराव सिंह ने बनारस के बाबू सांवल सिंह जी की अध्यक्षता में प्रस्ताव पारित करके क्षत्रिय समाज में एकता और जागृति लाने के उद्देश्य से एक समाचार पत्र, जिसका नाम 'राजपूत मासिक' दिया गया, प्रकाशित करवाया । जिसके माध्यम से देश के विभिन्न भागों में फैले समस्त क्षत्रिय समाज में उनकी सामाजिक-शैक्षणिक विकास एवं अनेक अन्य समस्याओं के निराकरण के लिये जनसंपर्क एवं नुक्कड़ सभाएँ की गई ।

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा संगठन का निर्माण करके उपरोक्त तीनों महापुरुषों ने समाज में एकता लाने के महत्व को समझाया और इसके साथ साथ राजपूत समाज के शैक्षणिक विकास में अपना सबकुछ न्यौछावर करके महान योगदान का परिचय दिया जिसे समाज आज भी प्रत्यक्ष रूप में आगरा व बनारस में देख सकता है । इन्होंने समाज की पीड़ा और परिस्थितियों को गंभीरता से समझा और समाज के विकास के लिए सार्थक प्रयास किये ।

इसके बाद महाराज प्रताप सिंह जी जम्मू व कश्मीर ने लाहौर से 'राजपूत गजट' नामक उर्दू समाचार पत्र प्रकाशित किया और ठाकुर सुखराम दास चौहान ने इस अखबार को एडिट किया । इन समाचार पत्रों के माध्यम से अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने दूसरे क्षत्रिय संगठनों के सहयोग से देश में जिलें और तालुका स्तर पर सभाओं की सूचनाओं के द्वारा समाज में एकता व जागृति लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया । सन 1885 ई. में स्व० पंडित मदन मोहन मालविय जी और कोटला के राजा उमराव सिंह जी के परामर्श से राजा बलवंत सिंह ने राजपूत बोर्डिंग हाउस को राजपूत हाई स्कूल में अपग्रेड करवाया और 1 लाख 50 हजार रुपये तथा 50 एकड़ जमीन भवन के लिए दान में दी, जो बाद में 1928 में इंटरमीडिएट कॉलेज में परिवर्तित हुआ और जिसका नाम बलवन्त राजपूत कॉलेज किया गया । सन 1940 में ये डिग्री कॉलेज बनाया गया, जो आज देश का एक बहुत बड़ा कॉलेज है और जिसके पास काफी बड़ा कृषि फार्म है । राज बलवंत सिंह जी ने स्व. रवीन्द्र नाथ टैगोर को भी शान्ति निकेतन के निर्माण में भी मदद की । राजा उदय प्रताप सिंह जी ने सन् 1909 में क्षत्रिय हाई स्कूल की स्थापना की जो कि सन् 1921 में इंटरमीडिएट कॉलेज में अपग्रेड हुआ और उदय प्रताप इंटरमीडिएट कॉलेज के नाम से जाना गया और बाद में सन 1949 में डिग्री कॉलेज में अपग्रेड हुआ । इसके अतिरिक्त ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में शिक्षा पाने के लिए भी अनेक छात्रों को छात्रवृत्ति दी ।

राजपूतों के शैक्षणिक विकास में राजा उमराव सिंह जी का भी बहुत योगदान रहा है और उन्होंने 1878 को शिक्षण संस्थान की स्थापना की व छात्रावास भी बनवाया और अनेक राजाओं का इस बारे में सहयोग भी लिया ।

सन् 1905 में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का नौवा अधिवेशन आगरा में हुआ इसमें एक सैन्ट्रल राजपूत कॉलेज खोलने का प्रस्ताव रखा गया और इसके पश्चात 1910 में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का 14वां अधिवेशन महाराजा जम्मू-कश्मीर की अध्यक्षता में कश्मीर में रखा गया । इसके बाद देश के अन्य राजपूत शासकों के द्वारा अन्य प्रान्तों में राजपूतों के लिए राजपूत बोर्डिंग हाऊस व स्कूल खोलने का प्रचलन हुआ । जिसमें ईडर के राजा प्रताप सिंह जी ने जोधपुर में चौपासनी स्कूल खोला और इसके बाद राजकोट, अजमेर, लाहौर, रायपुर और इन्दौर इत्यादि शहरों में राजपूतों की शिक्षा के लिये स्कूल व कॉलेज आरम्भ किये गये जिससे समाज में शिक्षा का स्तर काफी ऊँचा हुआ ।

सन 1948 तक हजारों गरीब राजपूत विद्यार्थियों को अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा द्वारा राजा-महाराजाओं ने आर्थिक सहायता देकर पढ़ाया है । अपनी रियासत में वजीफा मिलता था, साथ ही भारत के वायसराय व राज्यपालों के पास प्रस्ताव भेजकर व शिष्टमण्डल भेजकर ब्रिटिश की अंग्रेजी सरकार नई दिल्ली में बड़ी तादाद में राजपूतों को भारत की सरकारी नौकरियों में प्रवेश दिलाया । उस समय क्षत्रिय महासभा के पदाधिकारी राजा लोग ही होते थे । उनके व्यक्तिगत प्रभाव से अधिकांश कॉलेज व स्कूल (राजपूत) थे । अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वर्गीय महाराज साहब प्रताप सिंह जी जम्मू कश्मीर ने अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा में प्रस्ताव रखा कि भारत में एक राजपूत विश्व विद्यालय खोला जाए । जिसका आधा व्यय महासभा ने देने का वचन दिया । कार्य का शुभारंभ हुआ इसी बीच में श्रीमान पण्डित मदन मोहन मालवीय जी हिन्दू विश्वविद्यालय की योजना लेकर सभी राजा-महाराजाओं के पास पहुँचे । परिणाम यह हुआ कि राजपूत विश्वविद्यालय का कार्य स्थगित कर दिया गया । सन् 1947 में महाराज साहब तेज सिंह जी, अलवर राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने राजपूत विश्वविद्यालय के लिये अपना पैलेस और 11 लाख रुपये व दिल्ली में भवन बनाने की घोषणा की । परन्तु बाद में किन्हीं कारणों से यह स्थगित हो गया । महाराणा भोपाल सिंह जी उदयपुर ने राजपूत विश्वविद्यालय के लिए चितौड़गढ़ का फतेहप्रकाश पैलेस देने का आश्वासन दिया और इस हेतु उदयपुर में कार्यालय भी खुल गया लेकिन देश की आजादी के बाद यह योजना भी पूरी न हो सकी ।

संगठन व सामाजिक सुधार :-

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने सम्पूर्ण भारतवर्ष में अनेक प्रान्तों में अपनी शाखाएँ स्थापित की और इसके अतिरिक्त बर्मा, नेपाल और लंका में भी स्थापित की । क्षत्रिय महासभा ने दूसरे धर्म में जाने वाले राजपूतों को मिलाने के लिए भी बहुत प्रयास किया । जो आज भी जारी है । सन् 1932 से 1938 तक महासभा ने बड़े पैमाने पर शुद्धि आंदोलन चलाया लेकिन समाज ने उसको स्वीकार नहीं किया । पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार, गुजरात इत्यादि प्रदेशों में मुसलमान भाईयों को शुद्ध करने का कार्यक्रम था । उसे उस समय यदि राजपूत स्वीकार कर लेते तो देश का बंटवारा नहीं होता । अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्व० महाराजा साहब प्रताप सिंह जी जम्मू कश्मीर ने अपने राज्य में राजपूत मुसलमानों की शुद्धि करनी चाही लेकिन काशी के पंडितों के विरोध के कारण नहीं हो सकी । जिसका

परिणाम कश्मीर के दो टुकड़े होना है । अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने सिक्ख राजपूत भाइयों को अपने साथ मिलाया जो हर कार्यक्रम में आज भी शामिल होते हैं । इसके अतिरिक्त अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा दहेज प्रथा, मृत्यु भोज, फिजूल खर्ची, शराब व आपसी झगड़े मिटाने के लिए निरन्तर प्रयासरत है ।

महासभा का राष्ट्रीय स्तर पर योगदान :

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने सन् 1921 व 1922 में प्रस्ताव पास करके स्वदेशी खादी वस्त्र पहनने के लिए और विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करने के लिए आंदोलन किया । महासभा ने मद्रास प्रांत में हिन्दी भाषा लागू करने के लिए वायसराय व गर्वनर को मांगपत्र भेजा । अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय महाराजा साहब सवाई जयसिंह जी अलवर गोलमेज सम्मेलन में नरेशों के प्रतिनिधि के रूप में गये और देश में पूर्ण स्वराज्य की मांग की थी । जबकि महात्मा गांधी जी ने उत्तरदायी शासन की मांग की थी ।

स्वराज से पूर्व :

सन 1946 में देश के सभी राजा—महाराजाओं से अपील की कि वो अपने राज्यों के अन्तर्गत जनता को उत्तरदायी शासन दें । देश के विभाजन का अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा निरन्तर विरोध करती रही है और स्वराज के बाद सन 1947 में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा की ओर से हिन्दू कान्वेशन दिल्ली में बुलाया गया । जिसकी अध्यक्षता श्रीमान वीर सावरकर जी ने की और महासभा के शिष्ट मण्डल ने भारत के प्रथम गृहमंत्री श्री वल्लभ भाई पटेल से मिलकर हिन्दुओं के संरक्षण की मांग की ।

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ईसाईयों के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकने के लिए भी निरन्तर प्रस्ताव भेजती रही । अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने हिन्दू कोड बिल का सक्रिय विरोध किया और गौ हत्या बंद कराने के लिए पूज्य स्वामी करपात्री जी महाराज संस्थापक रामराज्य परिषद् के आंदोलन में सक्रिय भाग लिया और हिन्दी को देश की राष्ट्र भाषा का दर्जा दिये जाने की भी मांग की ।

चीन के हमले के समय क्षत्रिय महासभा ने आदरणीय महाराज साहब सवाईमान सिंह जी जयपुर की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय रक्षा समिति का गठन किया व देश व्यापी सभाएँ करके हजारों राजपूतों को फौज में भर्ती करवाया ।

राजनैतिक जागृति

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने समाज में राजनैतिक चेतना लाने का हर समय विशेष प्रयत्न किया। सन 1948 में ग्वालियर में उत्तरदायी शासन की घोषणा की। वहाँ निर्वाचन कराया, उस निर्वाचन में क्षत्रिय महासभा ग्वालियर राज्य शाखा ने अपने नाम से चुनाव लड़ा और इसमें 14 सदस्य विजयी हुए। कांग्रेस के 22 सदस्य जीते, 6 स्वतंत्र निर्वाचित हुये, जो अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के साथ हो गये। असमर्थ होकर कांग्रेस को क्षत्रिय महासभा से लिखित में सुलहनामा करना पड़ा और अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा को गृहमंत्री पद देने का वचन दिया। दिनांक 30 जनवरी 1948 को महात्मा गांधी जी की हत्या की आड़ लेकर कांग्रेस सरकार ने क्षत्रिय महासभा पर प्रतिबंध लगा दिया। क्षत्रिय महासभा के कार्यकर्ताओं को जेल में भेज दिया। जिनमें महासभा के संगठन मंत्री कुँवर रामदयाल सिंह जी ग्वालियर को दिल्ली जेल में बंद कर दिया गया। उस समय आदरणीय महाराजा साहब टीकमगढ़ बुन्देलखण्ड ने बिना निर्वाचन कांग्रेस को उत्तरदायी शासन दे दिया। क्षत्रिय महासभा ने चुनाव कराने की मांग की। उसके लिए आन्दोलन किया, जिसके फलस्वरूप दो राजपूतों की मृत्यु हुई। कई राजपूत जेल में बंदी बनाये गये। गांधीजी की मृत्यु के बाद दोनों जगहों के आन्दोलन वापिस लिये गये। सन 1952 में आरणीय महाराज साहब हनुवंत सिंह जी जोधपुर के नेतृत्व में क्षत्रिय महासभा ने अपने नाम से पूरे राजस्थान में चुनाव लड़ा, जिसमें क्षत्रिय महासभा के टिकट पर 62 राजपूत निर्वाचित हुए। महाराजा साहब हनुमन्त सिंह जी जोधपुर के अचानक हवाई जहाज दुर्घटना में निधन होने के कारण सरकार नहीं बन सकी। इतनी बड़ी संख्या में राजपूत सदस्य सब दलों को मिलाकर भी आज तक निर्वाचित नहीं हुए हैं। राजनैतिक दृष्टि से राजपूत समाज को उचित स्थान दिलाने के लिए क्षत्रिय महासभा समय-समय पर प्रयत्न करती रही। इस सम्बन्ध में क्षत्रिय महासभा को आशातीत सफलता मिल रही है।

सभी क्षत्रिय जातियों का संगठन

क्षत्रिय महानुभवों, क्षत्रिय समाज की एक मात्र संस्था, अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा है, जिसने समाज की बहुमुखी प्रगति के बारे में सोचा है व प्रयत्न कर रही है। समय की गति के हिसाब से समाज को संगठित व अग्रसर करने का सतत् प्रयत्न किया है। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने अन्य सभी क्षत्रिय जातियों को भी महासभा के साथ संगठनात्मक सम्बन्ध बनाने हेतु सन् 1940 आगरा में महासभा की प्रतिनिधि सभा की बैठक बुलाई। जिसमें जाट, गुर्जर, अहीर क्षत्रिय जातियों के प्रतिनिधि भी शामिल हुए। अजगर महासभा नाम की संस्था पंजाब के जाट नेता सर छोटूरामजी की अध्यक्षता में बनी। लेकिन कुछ राजनैतिक कारणों से यह संस्था चल न सकी।

लेकिन अभी प्रयास जारी है। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा की दृढ़ मान्यता है कि क्षत्रिय धर्म के आधार पर नया विकल्प दे सकता है। क्षत्रिय धर्म के आधार पर संगठित क्षत्रिय समाज ही राष्ट्र को रामराज्य के आधार पर नया विकल्प दे

सकता है। इसी में राष्ट्रहित है। इसकी पूर्ति के पश्चात ही क्षत्रिय समाज के सरिया झण्डे के नीचे संगठित होकर पहले की भांति पुनः माँ भगवती का स्मरण करते हुए राष्ट्र व जनता जनार्दन की सेवा करें, यही क्षत्रिय महासभा का संदेश है।

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा स्वतंत्रता के बाद :-

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने सन् 1947 के बाद राजा महाराजाओं के स्तर से नीचे आकर आम आदमी के स्तर पर कार्य करना शुरू किया क्योंकि सन 1947 के पूर्व महासभा के पदाधिकारी और उनका कार्य क्षेत्र राजा महाराजाओं तक ही सीमित था। सन 1947 के बाद देश के सभी क्षत्रिय राजा-महाराजाओं ने लोकतंत्र हित में अपने सभी अधिकार, सुविधाएँ व राजपाठ सरकार को सौंप दिये व उसकी एज में उनको केवल नाममात्र की राशि दी गई। भारत वर्ष में आजादी के बाद क्षत्रिय राजा-महाराजाओं का त्याग अद्वितीय है। देश में बिना किसी खूनी क्रान्ति के जनता को सभी अधिकार प्राप्त हो इस बात को लेकर जनहित में व राष्ट्रहित में इतना बड़ा त्याग किया गया।

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर :-

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का कार्यक्षेत्र न केवल भारतवर्ष में रहने वाले क्षत्रिय समाज के सामाजिक उत्थान व विकास तक ही सीमित रहा है बल्कि अमरीका, इंग्लैंड, अफ्रीका, साउथ ईस्ट एशिया व अन्य देशों में क्षत्रिय संगठनों को एक सूत्र में पिरोने के लिए अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष महाराजा डॉ. दिग्विजय सिंह, भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री भारत सरकार हमेशा प्रयत्नशील रहे हैं।

अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष :-

राजस्थान में जागीर उन्मूलन के समय छोटे जमींदार राजपूत भाईयों के हितों की अवहेलना की गई। इसको लेकर राजस्थान में राजस्थान भू-स्वामी संघ के नेतृत्व में सन् 1955 व सन् 1956 में राजस्थान भू स्वामी संघ ने आन्दोलन किया। जिसमें राजस्थान प्रदेश के 26 जिलों में आन्दोलन माननीय कुँवर आयुवान सिंह जी, माननीय ठा.सा. तनसिंह जी संस्थापक क्षत्रिय युवक संघ, विधायक बाडमेर, नेता राजस्थान विधानसभा विरोधी दल, ठा.सा. मदन सिंह जी दांता, कुँवर रघुवीर सिंह जी जावली अलवर के नेतृत्व में आन्दोलन हुआ। राजस्थान के लाखों राजपूत जेलों में बंदी बनाये गये। यह आंदोलन 6 महीने तक चला।

अन्त में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय बाबूराम नारायण सिंह जी, सांसद हजारीबाग (बिहार) की अध्यक्षता में, जयपुर में 05 अप्रैल, 1956 को ऐतिहासिक सम्मेलन बुलाया गया था। जिसमें राजस्थान के लाखों भू-स्वामी राजपूतों ने भाग लिया था। यह भारत के राजपूतों का ऐतिहासिक सम्मेलन था। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने राष्ट्रव्यापी आन्दोलन की घोषणा की। जिससे राजस्थान की कांग्रेस सरकार हिल उठी थी। राजस्थान भू-स्वामी संघ एवं क्षत्रिय महासभा से भारत के प्रथम प्रधानमंत्री माननीय पण्डित जवाहर लाल नेहरू जी ने समझौता किया एवं समाधान के बाद सन 1958-1959 के समय गुजरात के कच्छ के जागीरदारों का आन्दोलन हुआ था, जिसका समझौता क्षत्रिय महासभा द्वारा किया गया था।

महारावल लक्ष्मण सिंह, डुंगरपुर भूतपूर्व अध्यक्ष राजस्थान विधानसभा एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा की अवधि के दौरान सक्षिप्त बैठकों का विवरण:-

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का ऐतिहासिक सम्मेलन सन् 1960 में दूध-तलाई मैदान उज्जैन में सम्पन्न हुआ। राष्ट्रीय क्षत्रिय नेता आयुवान सिंह ने राष्ट्रीय अध्यक्ष हेतु महारावल लक्ष्मण सिंह डुंगरपुर, अध्यक्ष राजस्थान का नाम प्रस्तावित किया जिसका पूरे सदन ने हर्ष ध्वनि के साथ समर्थन करते हुये महारावल लक्ष्मण सिंह डुंगरपुर अध्यक्ष राजस्थान को अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित किया गया और श्री केशो दास पंजाब को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनाया गया। राव कृष्ण पाल सिंह आवागढ़ को वरिष्ठ उपाध्यक्ष व ठाकुर राम दयाल सिंह जी ग्वालियर को राष्ट्रीय महामंत्री बनाया।

प्रतिनिधि सम्मेलन की अध्यक्षता पूर्व सांसद एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा बाबू राम नारायण सिंह जी हजारी बाग, बिहार ने की। इस सम्मेलन में पूरे राष्ट्र के प्रमुख क्षत्रिय नेता शामिल हुये।

21 मई, 1961 को अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का अधिवेशन उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के झिंझक नाम स्थान पर सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में प्रसिद्ध क्षत्रिय नेता यशपाल पूर्व सांसद सहित अनेक राष्ट्रीय व प्रदेश के स्तरीय क्षत्रिय नेताओं ने भाग लिया।

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का तीन दिवसीय सम्मेलन नंगल टाउनशिप पंजाब में महारावल लक्ष्मण सिंह डुंगरपुर राष्ट्रीय अध्यक्ष की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन का आयोजन पंजाब के प्रसिद्ध क्षत्रिय नेता ठाकुर केशों दास उपाध्यक्ष पठानकोट ने किया।

इसी प्रकार अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का सम्मेलन 1963 में दमोह नाम स्थान पर मध्य प्रदेश में सम्पन्न हुआ।

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का सम्मेलन सन् 1965 में मध्य प्रदेश के सागर नामक स्थान पर राष्ट्रीय अध्यक्ष महारावल लक्ष्मण सिंह डुंगरपुर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का तीन दिवसीय सम्मेलन 25, 26 27 फरवरी, 1968 को ऐतिहासिक प्रातः स्मरणीय अनेक बलिदानों के प्रतीक स्थान चित्तौड़गढ़ राजस्थान में सम्पन्न हुआ। जिसमें महाराणा महेन्द्र सिंह मेवाड़ सहित अनेक राष्ट्रीय व प्रदेश स्तरीय क्षत्रिय नेताओं ने भाग लिया। इस सम्मेलन में सामाजिक उत्थान व संगठन को मजबूत करने हेतु महत्वपूर्ण निर्णय लिये।

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का अगला सम्मेलन 28,29,30 अप्रैल, 1973 को मध्य प्रदेश के छत्तरपुर नामक स्थान पर राष्ट्रीय अध्यक्ष महारावल डुंगरपुर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का अगला अधिवेशन सन 1974 में सोनपुर, बिहार में सम्पन्न हुआ । जिसकी अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष महारावल लक्ष्मण सिंह डुंगरपुर ने की ।

पंजाब के प्रसिद्ध क्षत्रिय नेता ठाकुर केशो दास राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के निमन्त्रण पर फरवरी 1978 में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का सम्मेलन पठानकोट, पंजाब में हुआ जिसमें उत्तरी भारत व दक्षिण भारत के अनेक क्षत्रिय नेताओं ने भाग लिया ।

25,26,27, फरवरी, 1982 में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का ऐतिहासिक सम्मेलन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष महारावल लक्ष्मण सिंह डुंगरपुर की अध्यक्षता में सिंगरमऊ, जौनपुर यू.पी. में सम्पन्न हुआ । जिसमें महाराजा गजसिंह जोधपुर, महाराणा महेन्द्र सिंह मेवाड़ सहित अनेक राष्ट्रीय नेता शामिल हुए । यह सम्मेलन राजा श्रीपाल सिंह सिंगरमऊ के निमन्त्रण पर सम्पन्न हुआ ।

वर्ष 1984 में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का राष्ट्रीय महासम्मेलन बिहार के सोनपुर नामक स्थान पर डाकबंगला मैदान, सोनपुर में हुआ । इस अधिवेशन के मुख्यातिथि पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. कर्ण सिंह थे और अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष महारावल लक्ष्मण सिंह डुंगरपुर ने की । इस अधिवेशन में जोधपुर नरेश महाराजा गज सिंह, महाराणा महेन्द्र सिंह मेवाड़, राजा श्री पाल सिंह सिंगरमऊ जौनपुर, ठाकुर केशो दास, राजा देवी सिंह मंडावा पूर्व सांसद इत्यादि अनेक क्षत्रिय नेता शामिल हुए । इस सम्मेलन में मांग की गई कि देश में जातिगत आरक्षण को समाप्त किया जाए तथा आर्थिक आधार पर आरक्षण संविधान में संशोधन लाकर लागू किया जाए । 29,30,31 मई 1978 को उत्तर प्रदेश के ललितपुर नामक स्थान पर सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं अध्यक्ष, राजस्थान विधान सभा की अध्यक्षता में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का सम्मेलन सम्पन्न हुआ ।

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष महारावल लक्ष्मण सिंह डुंगरपुर के प्रतिभाशाली नेतृत्व में पूरे भारतवर्ष में सभी प्रदेशों के अनेक स्थानों पर क्षत्रिय समाज के उत्थान व विकास के लिए प्रदेश, जिला व तालूका स्तर पर बैठकें की गई ।

उपरोक्त ऐतिहासिक बैठकें जिनका संक्षिप्त विवरण ऊपर दिया गया है, के अलावा पंजाब के हरियाणा के नंगल, पठानकोट, पौसी, राजपुरा, सैयद खैड़ी, रोपड़, चण्डीगढ़, थानेसर (कुरुक्षेत्र), करनाल, घरौंड़ा, मुलाना, बराड़ा, बाहरी, जीन्द इत्यादि अनेक स्थानों पर और इसी प्रकार उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तरी भारत एवं दक्षिणी भारत में अनेक सभाओं के द्वारा अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के माध्यम से क्षत्रिय समाज को संगठित करके सामाजिक बुराईयों (दहेज, फिजूलखर्ची, मृत्युभोज इत्यादि) को दूर करने के लिए तथा अनेक स्कूल, कॉलेज, छात्रावास के माध्यम से समाज के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य किया ।

28,29,30 मई, 1988 को क्षत्रिय महासभा जम्मू के निमन्त्रण पर अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का राष्ट्रीय सम्मेलन जम्मू-कश्मीर के जम्मू नामक स्थान पर सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष महारावल

डुंगरपुर ने की। इसमें ठाकुर केशोदास राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, श्री गुलचैन सिंह चारक, राजा देवी सिंह मंडावा, कोक सिंह भदौरिया इत्यादि अनेक राष्ट्रीय नेताओं ने भाग लिया। यह जम्मू की बैठक महारावल लक्ष्मण सिंह डुंगरपुर की अन्तिम बैठक थी। मई, जून 1989 में महारावल लक्ष्मण सिंह डुंगरपुर बीमार हो गए। इन परिस्थितियों में पूर्व सांसद राजा देवी सिंह मंडावा, ठाकुर केशो दास पठानकोट, पंजाब, कोक सिंह भदौरिया राष्ट्रीय महामंत्री व अनेक प्रमुख क्षत्रिय नेताओं ने बम्बई में महारावल साहब को उनकी बीमारी के दौरान उनके भतीजे युवराज राज सिंह के निवास स्थान पर मिलकर पूर्व केन्द्रीय मंत्री युवराज दिग्विजय सिंह वांकानेर को अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बनाए जाने बारे नियुक्ति पत्र प्राप्त किया। 6 जून 1989 को महारावल लक्ष्मण सिंह डुंगरपुर, राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा एवं पूर्व अध्यक्ष राजस्थान विधानसभा का महाराणा प्रताप जयन्ती के अवसर पर आकस्मिक निधन हो गया। उनके निधन के बाद अगस्त 1989 में श्री शंकर सिंह वाघेला सांसद के नॉर्थ एवन्यू दिल्ली स्थित निवास पर अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा की आयोजित महत्वपूर्ण बैठक में पूर्व केन्द्रीय मंत्री युवराज डॉ. दिग्विजय सिंह जी वांकानेर को अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का विधिवत् राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित किया गया।

अखिल भारतीय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व केन्द्रीय मंत्री महाराजा डॉ. दिग्विजय सिंह वांकानेर के कार्यकाल में हुई बैठकों का संक्षिप्त विवरण :- अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के नव निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष महाराजा डॉ. दिग्विजय सिंह, पूर्व सांसद राजा देवी सिंह मंडावा, ठाकुर फकीर सिंह भाटी पंचकूला, महामंत्री प्रहलाद सिंह राणा, ठाकुर जगतपाल सिंह अध्यक्ष दिल्ली प्रदेश, विजेन्द्र सिंह शिशोदिया अध्यक्ष मध्य प्रदेश, महेन्द्र सिंह तंवर, कुरुक्षेत्र अध्यक्ष हरियाणा, ठाकुर हरबंस सिंह स्वतंत्रता सेनानी पंजाब, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, शशी कांत पंवार बम्बई महाराष्ट्र राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, जय पाल सिंह सिसोदिया दिल्ली, जय सिंह राठौर राजस्थान, एस.पी. सिंह, दिल्ली, आनन्द मोहन एवं श्रीमती लवली आनन्द पूर्व सांसद, ठाकुर देवेन्द्र सिंह बिहार, श्री आर.एन. सिंह कानपुर, विजय सिंह परिहार, राजेन्द्र सिंह भदौरिया, मध्य प्रदेश, प्रेम पाल पुण्डीर महाराष्ट्र, कर्नल देवेन्द्र सिंह वीर चक्र हरियाणा, श्रीमती अंजना कंवर दिल्ली, राजा मोहन सिंह कनौता जयपुर, श्री सूरत सिंह भदौरिया दिल्ली, ठाकुर भोला सिंह भूतपूर्व विधायक उत्तर प्रदेश, स्वामी सुरेशा नन्द भूतपूर्व सांसद, इत्यादि अनेक क्षत्रिय नेताओं ने अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के अध्यक्ष महाराजा डा. दिग्विजय सिंह के नेतृत्व में पूरे देश में बैठके कर क्षत्रिय समाज को संगठित एवं जागृत करने का निरन्तर प्रयास किया। जिसके फलस्वरूप पूरे देश में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के प्रति आस्था बढ़ी और कश्मीर से कन्याकुमारी तक देश एवं विदेश में भी क्षत्रिय समाज की एकमात्र सर्वोच्च संस्था के रूप में समाज के समक्ष आई। इस अवधि में पूरे देश में क्षत्रिय समाज द्वारा मांग की गई कि देश की राजधानी दिल्ली में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के 100 वर्ष पूरे होने पर एक महासम्मेलन बुलाया जाए जिसमें देश – विदेश से सभी क्षत्रियों को भाग लेने के लिए निमंत्रण दिया जाए।

1986 में डॉ. महाराजा दिग्विजय सिंह के पीठासीन कार्यकाल में उन्होंने 11 बेला सती मन्दिर के प्रांगण में एक विशाल सभाकक्ष बनवाया। भगवान शिव के आशीर्वाद से महासभा द्वारा 1997 को एक विशाल शताब्दी समारोह का लाल किला के मैदान में सफल आयोजन किया गया। भारत के तत्कालीन पाँच मुख्यमंत्री, श्रीयुत भैरव सिंह शेखावत जी,

राजस्थान, श्री वीरभद्र सिंह जी, हिमाचल प्रदेश, राजा दिग्विजय सिंह, मध्यप्रदेश, धरम सिंह कर्नाटक, शंकर सिंह बघेला मुख्यमंत्री गुजरात, राणा प्रताप सिंह राणे गोवा एवम् पार्टी अध्यक्ष जगदम्बिकापाल सिंह जी उत्तर प्रदेश (कटोरा), राजनाथ सिंह अध्यक्ष उत्तर प्रदेश (भाजपा) के नेतृत्व में भारत के अधिकांश सांसदों, विधायकों विधान परिषद् सदस्यों, राजा-महाराजाओं समस्त जगद्गुरु विद्वानों, क्षत्रिय संघों के विशाल कार्यसमूहों का जन सैलाब उमड़ पड़ा । लगभग 5 लाख के विशालकाय जनसमूह की व्यवस्था का कार्य क्षत्रिय युवकों ने जिस शालीनता से किया वह अपने आप आप में अद्वितीय था ।

इन्द्र भगवान श्री ने इस विशाल समूह से अविभूत होकर भीषण नाद के साथ इस सम्मेलन का स्वागत किया । जन समूह इतना विशाल था कि जमुना ब्रिज के उस पार, प्रांगण में स्थान अभाव के कारण हजारों वाहनों को रोकना पड़ा । भारतीय इतिहास में क्षत्रिय समूह का यह सम्मेलन अद्वितीय था ।

इस सम्मेलन का एक अभूतपूर्व योगदान यह रहा कि राजा श्रीपाल सिंह सिंगरमउ जौनपुर यू.पी. अध्यक्ष ने जिस अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा सिंगरामऊ जौनपुर उ. प्र. का अलगाव कर लिया था, उसको समाप्त कर उन्होंने डा. दिग्विजय सिंह बाकानेर को राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वीकार कर लिया और अपनी महासभा को डॉ. दिग्विजय सिंह की महासभा में विलय कर दिया । इसी प्रकार राजपूत महासभा नागपुर ने भी लिखित रूप में "अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा" नई दिल्ली से सम्बन्धित कर दिया । परिणामतः यह महासभा भारत के 32 राज्यों, केन्द्र शासित प्रदेशों सहित विश्व के अनेक देशों में संगठित हो गई, जो अपने आप में एक अनुपम देन है । यह कहना अनुचित न होगा कि यह क्षत्रिय महासभा भारत के राज्यों में व्याप्त क्षत्रिय संघों का एक महासंघ है, जिसका उद्देश्य 1200 सौ साल की विशाल दासता में क्षत्रियों के राष्ट्रीय उत्थान में बहुमुखी योगदान के लिए प्रेरित करना है । इसीलिए महासभा ने अपने समस्त कार्यक्रमों में भगवान श्री राम, श्री कृष्ण, भगवान महावीर स्वामी (जैन धर्म प्रवर्तक), एशिया के प्रकाशपूर्ण भगवान गौतम बुद्ध, गुरुग्रंथ के प्रणेता दसों गुरु (गुरु नानक देव से गुरु गोबिंद सिंह तक) सभी क्षत्रिय धर्म प्रणेताओं को जन मानस के साथ प्रतिष्ठापित किया है । जिससे सर्वसमाज की राष्ट्रीय भावना को पुनः स्थापित करना परम् उद्देश्य है ।

शताब्दी समारोह 19 अक्टूबर 1997

भारत वर्ष के अनेक प्रांतों में क्षत्रिय समाज के द्वारा मांग की गई कि अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का शताब्दी वर्ष 19 अक्टूबर, 1997 को विशाल स्तर पर मनाया जाये । अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री महाराजा दिग्विजय सिंह वांकानेर राष्ट्रीय अध्यक्ष व भूतपूर्व सांसद, राजा देवी सिंह मंडावा राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष के नेतृत्व में गहन विचार-विमर्श के बाद सन 1994 में राष्ट्रीय कार्यकारिणी वाराणसी व हरिद्वार की बैठक में सर्व सम्मति से 19 अक्टूबर, 1997 को महासभा का शताब्दी समारोह दिल्ली में मनाने का निर्णय लिया । 15 व 16 अप्रैल 1995 को राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक कुरुक्षेत्र में सम्पन्न हुई । इसी सम्बन्ध में 25 जून, 23 अगस्त, 14 नवम्बर, 1995 में राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक दिल्ली में सम्पन्न हुई व शताब्दी समारोह पर विचार विमर्श किया गया । इस पर आगे विस्तृत चर्चा की कई प्रकार की जिम्मेवारी लगाई गई । श्री आनन्द मोहन व लवली आनन्द सांसद बिहार के निमन्त्रण पर 5 व 6 अगस्त 1995 को राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक राजगिरी अतिथि गृह, बिहार में सम्पन्न हुई जिसकी अध्यक्षता महाराजा दिग्विजय सिंह वांकानेर ने की । शताब्दी समारोह की एक महत्वपूर्ण बैठक 7 मार्च 1996 को राजस्थान हाऊस पृथ्वी राज रोड़, दिल्ली में सम्पन्न हुई । शताब्दी समारोह सफलता पूर्वक मनाने के लिए 1996 वर्ष में दिल्ली, भोपाल, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, सूरत (गुजरात), मुम्बई, महाराष्ट्र व जयपुर राजस्थान (7 मार्च) में महासभा की बैठकें हुई । सन 1997 में फिर मुम्बई, दिल्ली, यू.पी. व अनेक स्थानों पर सभी प्रदेशों में महासभा की बैठक हुई और शताब्दी समारोह को जोर शोर से मनाने के लिए महासभा के प्रदेश अध्यक्षों और पदाधिकारियों को जिम्मेवारी सौंपी गई । राजा दिग्विजय सिंह तत्कालीन मुख्यमंत्री मध्य प्रदेश ने शताब्दी वर्ष को सफलता पूर्वक मनाने के लिए अत्यधिक सहायता की ।

19 अक्टूबर 1997 को लाल किला मैदान, नई दिल्ली में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का शताब्दी समारोह मनाया गया । जिसकी अध्यक्षता महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष महाराज डा. दिग्विजय सिंह वांकानेर भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री व राष्ट्रीय अध्यक्ष ने की और तत्कालीन मुख्यमंत्री मध्य प्रदेश राजा दिग्विजय सिंह मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुये । इसके अतिरिक्त श्री भैरों सिंह शेखावत मुख्यमंत्री राजस्थान, श्री वीरभद्र सिंह जी मुख्यमंत्री हिमाचल, श्री शंकर सिंह वाघेला मुख्यमंत्री गुजरात व भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. कर्ण सिंह जम्मू-कश्मीर समेत अनेक मंत्री, सांसद, राजा-महाराजा व अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय तथा प्रदेश स्तर के नेता शामिल हुये और इस विशाल समारोह में पूरे देश के लगभग 5 लाख क्षत्रियों ने शामिल होकर इस समारोह को अभूतपूर्व ऐतिहासिक सफल समारोह के तौर पर मनाया और इस समारोह में क्षत्रिय समाज के संगठन व सर्वांगीण विकास के लिये अनेक प्रस्ताव पास किये गये ।

राष्ट्रीय क्षत्रिय मिलन समारोह लखनऊ 1998

इसके उपरान्त 8 नवम्बर, 1998 को लखनऊ के बेगम हजरत गंज महल पार्क में राष्ट्रीय क्षत्रिय मिलन समारोह मनाया गया । जिसमें लाखों क्षत्रियों ने भाग लिया । उपरोक्त सम्मेलन में भी महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. युवराज

दिग्विजय सिंह ने अध्यक्षता की और समारोह के मुख्यातिथि भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री डा. कर्ण सिंह रहे। इस समारोह का आयोजन श्री ठाकुर भोला सिंह, भूतपूर्व विधायक उत्तर प्रदेश ने किया। इस समारोह की तैयारी में भी अनेक बैठकें की गईं।

राष्ट्रीय क्षत्रिय मिलन समारोह भोपाल 15 अक्टूबर, 2000

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का एक विशाल राष्ट्रीय क्षत्रिय मिलन समारोह लाल परेड ग्राउंड 15 अक्टूबर 2000 को सम्पन्न हुआ। इस समारोह का आयोजन मध्य प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री राजा दिग्विजय सिंह ने किया समारोह के मुख्य अतिथि कांची मठ के आदि शंकराचार्य थे और सम्मेलन की अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व केन्द्रीय मंत्री महाराजा डॉ. दिग्विजय सिंह वांकानैर ने की। इस समारोह में पूरे देश से राष्ट्रीय व प्रान्तीय क्षत्रिय नेताओं ने भाग लिया। सम्मेलन में सर्वसम्मति से मृत्युभोज को समाप्त करने जैसे अनेक सामाजिक बुराईयों को समाप्त करने का प्रस्ताव पास किये गये।

इसी प्रकार सन् 1999 में वाकांनेर पैलेस, गुजरात में राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक सम्पन्न हुई। 15-16 जनवरी, 2000 को प्राचीन शिव मन्दिर, नई दिल्ली व उसके उपरान्त सन 2000 में 24-25 जून को हरि पैलेस, जम्मू, कृष्णा मैमोरियल हाल पटना इत्यादि अनेक स्थानों पर महासभा ने बैठकें की। सन् 2001 में 18-19 अगस्त को गौरी शंकर मन्दिर पिंजौर गार्डन, 4 नवम्बर, 2001 को प्राचीन शिव मन्दिर, दिल्ली। 24 जनवरी 2001 को जनपथ क्लब अहमदाबाद में बैठक हुई और इसके अतिरिक्त 27 नवम्बर, 2001 को अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का दिल्ली में प्रतिनिधि सम्मेलन बुलाया गया जिसमें युवराज डॉ. दिग्विजय सिंह वांकानैर पूर्व केन्द्रीय मंत्री भारत सरकार को पुनः राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित किया गया व राष्ट्रीय कार्यकारिणी का गठन किया गया। सन् 2001 में हिमाचल के अध्यक्ष यशपाल राणा के द्वारा हिमाचल में राजा का तालाब सिहोंटा (मण्डी), राजगढ़, सोलन और शिमला में अनेक बैठकों का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय कोर कमेटी की बैठक जो शिमला में आयोजित की गई, उसमें हिमाचल के मुख्य मंत्री वीरभद्र सिंह, ठाकुर कुंवर सिंह, श्रीमती आशा कुमारी व चन्द्रेश कुमारी एवं मंत्रीगण हिमाचल एवं श्री विजय सिंह मनकोटिया विधायक इत्यादि ने हिस्सा लिया। उपरोक्त बैठक की अध्यक्षता युवराज दिग्विजय सिंह राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने की। दिल्ली, मंडावा, मुम्बई व अनेक स्थानों पर महासभा की बैठकें हुईं। सन् 2002 में 17 जून को अमर क्षत्रिय सभा के निमंत्रण पर जम्मू में, 21 से 24 अप्रैल 2002 को आन्ध्र प्रदेश के विशाखापटनम, विजयनगरम, श्री शेलम व हैदराबाद में राष्ट्रीय अध्यक्ष महाराजा डॉ. दिग्विजय सिंह की अध्यक्षता में बैठकें हुईं। 10 मार्च 2002 को पठानकोट में वार्षिक बैठकें हुईं।

8, 9 व 10 अगस्त 2003 को तामिलनाडू प्रांत के पलायम स्थान पर राष्ट्रीय कोर कमेटी की बैठक हुई जो श्री जानकी राम राजू व राजा पलायम के निमंत्रण पर की गई। दिनांक 16-17 जून 2003 में स्व. मोहन सिंह कनौता के निमंत्रण पर 10 अगस्त को जयपुर में व रघुपति राजा के निमंत्रण पर तामिलनाडु के राज्यपलायन में 11-12 अक्टूबर को स्वर्गीय अजीत सिंह भूतपूर्व सांसद बिहार के निमन्त्रण पर जगदीश नगर चमरहारा, मंहगार, वैशाली में महाराजा दिग्विजय सिंह की अध्यक्षता में अनेक बैठकें सम्पन्न हुईं। 10 अगस्त, 2004 में तेज सिंह राठौर के निमन्त्रण पर जयपुर,

राजस्थान में, इसके अतिरिक्त पटना, दिल्ली व उत्तर प्रदेश व अन्य कई प्रदेशों में बैठकें सम्पन्न हुईं। 23 अप्रैल 2006 को कृष्णा मैमोरियल हाल, पटना—बिहार में ऐतिहासिक वीर कुंवर सिंह जयन्ती अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा द्वारा मनाई गई, जिसमें प्रभु नाथ सांसद, श्री सीता राम भूतपूर्व मंत्री, श्री राम विलास पासवान केन्द्रीय मंत्री श्री अजीत सिंह पूर्व सांसद समेत अनेक नेताओं ने भाग लिया उपरोक्त समारोह की अध्यक्षता अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. दिग्विजय सिंह ने की। सन 2005, 2006 व 2007 में चण्डीगढ़, महाराष्ट्र, यू.पी., राजस्थान, धाकड़ा एन्कलेव, आगरा, सन् 2007 में पटना, 28 सितम्बर 2007 को मुम्बई व श्रीमती लवली आनन्द भूतपूर्व सांसद के निमन्त्रण पर 4 मई, 2008 को पटना में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा की बैठक सम्पन्न हुई और सर्व सम्मति से प्रस्ताव पास कर आनन्द मोहन पूर्व सांसद के समर्थन में प्रस्ताव पास किया गया। सन 2008 में 6 जून को महाराणा प्रताप जयन्ती, हरियाणा में जगाधरी में सम्पन्न हुई जिसमें महाराजा पहाड़पुर मुख्यातिथि रहे। इसी प्रकार सन 2009 में लखनऊ, फगवाड़ा, पटना, उदयपुर, जयपुर, ग्वालियर, कुरुक्षेत्र, भिवानी व 26—27 जुलाई को ओंकारेश्वर मध्य प्रदेश में महाराजा दिग्विजय सिंह जी की अध्यक्षता में बैठकें सम्पन्न हुईं। 15 जून 2010 को कुरुक्षेत्र में महाराणा प्रताप जयन्ती मनाई। जिसमें स. हरमोहिन्दर सिंह चट्ठा, दिनेश प्रताप विधायक (उ.प्र.), स्वामी सुरेशानन्द, भूतपूर्व सांसद प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

जातिगत आरक्षण को समाप्त करने व आर्थिक आधार पर आरक्षण देने की मांग बारे काश्मीर से कन्याकुमारी तक रथयात्रा

16—17 अप्रैल, 2010 को लखनऊ में महासभा का राष्ट्रीय सम्मेलन सम्पन्न हुआ। जिसमें सर्वसम्मति से महाराजा दिग्विजय सिंह वांकानेर को राष्ट्रीय अध्यक्ष, महेन्द्र सिंह तंवर, कुरुक्षेत्र को राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष, श्री आर.एन. सिंह कानपुर व श्री प्रेम पाल पुन्डीर मुम्बई को राष्ट्रीय महासचिव तथा राष्ट्रीय कार्यकारिणी का गठन किया गया। इसके उपरान्त महासभा की राष्ट्रीय कोर कमेटी की बैठक में मोतीहारी बिहार में विशाल रैली करने का निर्णय लिया गया। और मोतीहारी की विशाल जनसभा में प्रस्ताव पास कर उस ऐतिहासिक स्थल पर जहाँ से सन 1917 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने ऐतिहासिक आन्दोलन शुरु किया था भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा महाराजा डॉ. दिग्विजय सिंह के नेतृत्व में महासभा ने संकल्प लिया कि देश में जातिगत आरक्षण को समाप्त करने के लिए व आर्थिक आधार पर आरक्षण लागू करवाने के लिए कश्मीर से कन्याकुमारी तक ऐतिहासिक रथ यात्रा शुरु की जाए। इसके उपरान्त राष्ट्रीय कार्यकारिणी की एक बैठक ऊना हिमाचल में सम्पन्न हुई व इसके उपरान्त 17 अक्टूबर, 2010 को दशहरे के दिन अमर क्षत्रिय सभा जम्मू के ऐतिहासिक चबूतरे से महाराजा दिग्विजय सिंह के नेतृत्व में जातिगत आरक्षण को समाप्त करने व आर्थिक आधार पर आरक्षण लागू करवाने के लिए राष्ट्रव्यापी रथ यात्रा शुरु की गई जो जम्मू—कश्मीर, हिमाचल, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक व तमिलनाडु से होती हुई। 14 जनवरी 2011 को कन्याकुमारी पहुँची और इसके उपरान्त कन्याकुमारी से शुरु होकर तमिलनाडू, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान व उत्तर प्रदेश होती हुई 11 मार्च 2011 को दिल्ली पहुँची और 12 मार्च को 2011 को महाराजा डा. दिग्विजय सिंह वांकानेर भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री व राष्ट्रीय अध्यक्ष के नेतृत्व में राजघाट दिल्ली पर धरना देने के उपरान्त

13 मार्च 2011 को रामलीला मैदान दिल्ली में सभा करने के उपरान्त जंतर-मंतर दिल्ली पर प्रदर्शन किया । व आर्थिक आधार पर आरक्षण को लागू करवाने के लिये महामहिम राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री भारत सरकार, गृह मंत्री भारत सरकार, नेता विपक्ष लोकसभा को मांगपत्र दिया गया । उपरोक्त राष्ट्रव्यापी रथ यात्रा को सफल बनाने के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष महाराजा दिग्विजय सिंह ने अधिकांश समय रथ पर रह कर पूरे देश में जातिगत आरक्षण के खिलाफ आंदोलन चलाने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और दिल्ली व आसपास के क्षेत्र में अनेक सभाएं करके लोगों को इस सम्बन्ध में जागृत किया । अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने सबसे पहले देश में आरक्षण को लेकर ऐतिहासिक रथ यात्रा के माध्यम से जन आंदोलन चलाकर आरक्षण को राष्ट्रीय चर्चा का विषय बनाया और केवल इसके बाद ही राजा दिग्विजय सिंह पूर्व मुख्यमंत्री मध्य प्रदेश, सुश्री मायावती मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश व अनेक राष्ट्रीय व प्रदेश के नेताओं ने आर्थिक आधार पर आरक्षण दिये जाने की मांग को समर्थन दिया । यह अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा की राष्ट्रीय हित में व आने वाली पीढ़ियों के हित में एक बहुत बड़ी देन है । आर्थिक आधार पर आरक्षण की मांग को लेकर 18 अगस्त 2011 को अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा द्वारा जंतर मंतर दिल्ली में धरने का आयोजन किया गया । इससे पहले राष्ट्रीय कोर कमेटी की बैठक जयपुर राजस्थान में हुई जिसमें उपरोक्त धरने देने बारे निर्णय लिया गया था । हरियाणा में 30 जून 2012 को राष्ट्रीय कोर कमेटी की बैठक बुलाई गई

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष महाराजा दिग्विजय सिंह के नेतृत्व में उपरोक्त मांग को लेकर निरन्तर प्रयासरत रही और 28 दिसम्बर, 2011 से 2 जनवरी 2012 तक लगातार जंतर मंतर पर ब्राह्मण, वैश्य, पंजाबी व अन्य स्वर्ण जातियों के सहयोग से धरना व प्रदर्शन करके भारतवर्ष की सरकार को उपरोक्त मांग मानने के लिए सचेत किया ।

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा द्वारा 6 मई 2012 को तत्कालीन थलसेना अध्यक्ष जनरल वी.के.सिंह के समर्थन में जंतर मंतर नई दिल्ली पर विशाल सभा का आयोजन किया गया व भ्रष्टाचार के खिलाफ प्रस्ताव पास कर सरकार को मांगपत्र दिया गया । इस अवसर पर युवराज केसरी सिंह वांकानेर विशेष रूप से शामिल हुये ।

18-19 जुलाई, 2012 को मध्य प्रदेश के उज्जैन में राष्ट्रीय कोर कमेटी की बैठक सम्पन्न हुई, जिसमें युवराज केसरी सिंह वांकानेर विशेष रूप से शामिल हुये इस बैठक की अध्यक्षता श्री महेन्द्र सिंह तंवर राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष ने की । 21-22 अगस्त 2012 को महाराष्ट्र की पवित्र नगरी शिरडी में अखिल भारतीय महासभा का राष्ट्रीय सम्मेलन सम्पन्न हुआ । जिसमें राष्ट्र संत भइयू जी महाराज मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुये ।

18 जून 2013 को अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने एन.डी.आर.आई. करनाल में पृथ्वी नाथ चौहान जयन्ती मनाई जिसकी अध्यक्षता कार्यकारी अध्यक्ष महेन्द्र सिंह तंवर ने की । अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा की राष्ट्रीय कोर कमेटी की बैठक 16-17 मार्च, 2013 को चण्डीगढ़ में महाराजा डॉ. दिग्विजय सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई ।

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा की शताब्दी समारोह के बाद अनेक बैठकें देश के विभिन्न भागों में सम्पन्न हुईं। सन 1999 में वाकांनेर पैलेस जनपथ क्लब अहमदाबाद व हैदराबाद, आगरा, इन्दौर, मंडावा इत्यादि में राष्ट्रीय कार्यकारिणी व राष्ट्रीय कौर कमेटी की बैठकों में आरक्षण के आंदोलन को चलाने के सम्बन्ध में चर्चा की गई व संगठन को मजबूत बनाने व समाज की अनेक समस्याओं पर विस्तृत चर्चा की गई।

जोधा अकबर टी.वी. सीरियल:—

सन 2013 में एकता कपूर द्वारा जारी टी.वी. सीरियल जोधा अकबर के विरोध में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, मध्य प्रदेश उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र व बिहार इत्यादि प्रदेशों में जोरदार जन आंदोलन के द्वारा उपरोक्त सीरियल का विरोध किया और 17 जुलाई 2013 को चण्डीगढ़ में एक विशाल जन प्रदर्शन के द्वारा उपरोक्त सीरियल को बंद करवाने के लिए सरकार से मांग की गई। इस सम्मेलन में लगभग 15 हजार क्षत्रियों ने भाग लिया। हजारों क्षत्रियों ने गिरफ्तारी दी और कई सौ क्षत्रिय पुलिस द्वारा लाठी चार्ज, आंसु गैस व पानी की बौछारों के द्वारा बुरी तरह घायल हुये। इस अवसर पर सैक्टर 11 पुलिस थाना चण्डीगढ़ ने राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष महेन्द्र सिंह तंवर, चण्डीगढ़ के अध्यक्ष सुखदेव राणा, डॉ. विश्वराज करनाल के विरुद्ध मुकद्मा नं. 271, जेरे धारा 148, 149, 307, 352, 427, 332, 353 आई.पी.सी. के तहत मुकद्मा दर्ज किया।

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने उपरोक्त मांग को मनवाने के लिए 18 अगस्त 2013 को जंतर मंतर दिल्ली में ऐतिहासिक आक्रोश रैली आयोजित की। जिसमें लगभग 20 हजार क्षत्रियों ने भाग लिया और महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व केन्द्रीय मंत्री महाराजा डॉ. दिग्विजय सिंह ने अध्यक्षता की। इस अवसर पर भी पुलिस के लाठी चार्ज के द्वारा हजारों क्षत्रियों को गम्भीर चोटें आईं व पार्लियामेंट स्ट्रीट थाने के अंतर्गत 18 अगस्त 2013 को राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष महेन्द्र सिंह तंवर व 20 अन्य क्षत्रियों के विरुद्ध मुकद्मा नं. 142 जेरे धारा 148, 149, 332, 352, 353, 427 आई.पी.सी. के तहत मुकद्मा दर्ज करके गिरफ्तार किया गया। जिन्हें बाद में अदालत द्वारा जमानत पर रिहा किया गया। उपरोक्त केस अभी भी अदालत में लम्बित है।

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने 19 अक्टूबर 2013 को चण्डीगढ़ में महासभा की वर्ष गांठ मनाई जिसमें हजारों क्षत्रियों ने भाग लिया। इसी प्रकार सन 2014 में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने मध्य प्रदेश के खरगोल, महेश्वर, इन्दौर, जयपालपुर इत्यादि में महाराणा प्रताप जयन्ती मनाई। इसकी अध्यक्षता राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष महेन्द्र सिंह तंवर व प्रदेश अध्यक्ष विजय सिंह परिहार व राष्ट्रीय महामंत्री अनिल सिंह चन्देल ने की। सन 2014 में मध्य प्रदेश के नव निर्वाचित 36 क्षत्रिय विधायकों का सम्मान समारोह मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में किया गया जिसकी अध्यक्षता प्रदेश अध्यक्ष विजय सिंह परिहार ने की व मुख्य अतिथि राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष महेन्द्र सिंह तंवर थे।

सन 2015 में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने राजपूत प्रतिनिधि सभा हरियाणा के साथ मिलकर प्रदेश स्तर पर करनाल में महाराणा प्रताप जयन्ती मनाई जिसकी अध्यक्षता महाराजा रघुबीर सिंह सिरोही ने की और इस अवसर पर

हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर मुख्य अतिथि रहे । इसके अतिरिक्त सन 2015 में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने वांकांनेर, दिल्ली, उज्जैन, उदयपुर, चण्डीगढ़, सोनपुर बिहार, पिजौर, रादौर व भिवानी इत्यादि में भी अनेक बैठकें की । 28–29 अक्टूबर, 2015 को राष्ट्रीय कोर कमेटी की बैठक उदयपुर राजस्थान में हुई जिसकी अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष महाराजा दिग्विजय सिंह वाकांनेर ने की । इस अवसर पर महासभा के संरक्षक महाराजा रघुबीर सिंह सिरोही विशेष रूप से उपस्थित थे । समारोह का आयोजन राव कमलेन्द्र सिंह बठेड़ा पूर्व विधायक ने किया । अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने आर्थिक आधार पर आरक्षण लागू करवाने की मांग को लेकर 14 नवम्बर, 2015 को जंतर मंतर दिल्ली में धरना दिया । इसकी अध्यक्षता राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष महेन्द्र सिंह तंवर ने की । इस अवसर पर राष्ट्रीय महामंत्री श्री अनिल सिंह चन्देल मध्य प्रदेश के अध्यक्ष विजय सिंह परिहार, चण्डीगढ़ के अध्यक्ष सुखदेव सिंह राणा व दिल्ली प्रदेश की अध्यक्ष अंजना कंवर इत्यादि व अनेक प्रमुख नेताओं ने भाग लिया ।

राष्ट्रीय अधिवेशन, उज्जैन, 2015

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने 19 अप्रैल 2015 को उज्जैन मध्य प्रदेश में राष्ट्रीय अधिवेशन बुलाया, जिसमें महाराजा डा. करण सिंह, महाराजा गज सिंह जोधपुर, महाराजा रघुबीर सिंह सिरोही व राजा दिग्विजय सिंह, पूर्व मुख्यमंत्री मध्य प्रदेश को सर्व सम्मति से सभा का संरक्षक चुना गया और महाराजा डॉ. दिग्विजय सिंह पूर्व केन्द्रीय मंत्री राष्ट्रीय अध्यक्ष व महेन्द्र सिंह तंवर राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष सर्व सम्मति से चुने गये । इसके अतिरिक्त श्री आर. एन. सिंह, कानपुर, उत्तर प्रदेश व श्री अनिल सिंह चन्देल उज्जैन मध्य प्रदेश को सर्व सम्मति से राष्ट्रीय महामंत्री व वर्तमान राष्ट्रीय कार्यकारिणी को दोबारा चुना गया । सन 2016 में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने दिल्ली चण्डीगढ़ हरियाणा, मध्य प्रदेश, व हिमाचल इत्यादि अनेक स्थानों पर जन सभाए की व सामाजिक समस्याओं पर विस्तृत चर्चा की । 7 जून 2016 को हिमाचल – उना जिले के बाथू नाम स्थान पर महाराणा प्रताप जयन्ती मनाई और मध्य प्रदेश के शाहजापुर में महाराणा प्रताप जयन्ती मनाई जिसमें मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री राजा दिग्विजय सिंह मुख्य अतिथि व राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष महेन्द्र सिंह तंवर अध्यक्ष थे । इसके अतिरिक्त हिमाचल के चामुण्डा, मन्डी, हरौली व ऊना इत्यादि स्थानों पर भी अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने कई महत्वपूर्ण बैठकें की ।

शताब्दी सम्मेलन की प्रतिक्रिया

19 अक्टूबर 1997 के विशालकाय अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा शताब्दी समारोह ने भारत के समस्त राजनैतिक दलों में एक हलचल सी पैदा कर दी। क्षत्रिय मिलन की इस अभूतपूर्व घटना से कुछ स्वार्थी तत्व इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपने निजी स्वार्थों के लिए अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के नाम का हर सम्भव दुरुपयोग करना प्रारम्भ कर दिया। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा सिगरामउ के अध्यक्ष श्री पाल सिंह के द्वारा अपनी महासभा को डॉ. दिग्विजय सिंह की अध्यक्षता में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा में विलय के बाद तीन बार अनौपचारिक रूप से महासभा को अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा सिगरामउ जौनपुर के नाम जीवित किया गया पर स्वार्थ लोलुपता — में आपस में फूट पड़ जाने के कारण उनके प्रयास विलुप्त हो गये।

राष्ट्रीय क्षत्रिय मिलन समारोह भोपाल 2000 के बाद कुछ लोगों ने अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के नाम का अवैध रूप से दुरुपयोग करते हुये इस 120 साल पुरानी अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के नाम से कई समानान्तर सभायें बना ली हैं। जिससे देश में क्षत्रिय संगठन व क्षत्रिय समाज को बहुत आघात पहुँचा है। समानान्तर सभाओं के पदाधिकारी न तो कभी अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा की बैठकों में आये न कभी अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के पदाधिकारियों को चुनौती दी और न कभी किसी बैठक की बुलाने की अनुमति ली गई।

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष महाराजा दिग्विजय सिंह वांकानेर 1989 से निरंतर महासभा के अध्यक्ष हैं। उनकी अध्यक्षता में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का 19 अक्टूबर 1997 को शताब्दी वर्ष मनाया गया। सन् 1998 में बेगम हजरत महलपार्क में राष्ट्रीय क्षत्रिय मिलन समारोह मनाया गया और इसके बाद 2000 में भोपाल के लाल परेड गाउंड में अगला राष्ट्रीय क्षत्रिय मिलन समारोह मनाया गया। सन् 2001 के बाद जातिगत आरक्षण के विरुद्ध देश में आर्थिक आधार पर आरक्षण लागू करवाने के लिए कश्मीर से कन्या कुमारी तक राष्ट्रीय रथ यात्रा समेत अनेक बार जन्तर मन्तर पर धरने देकर इस पक्ष को सरकार के समक्ष रखा। इसके पश्चात् पूरे देश में जोधा अकबर टी.वी. सिरियल के विरुद्ध देशव्यापी आंदोलन किया गया। अभी भी महाराजा डॉ. दिग्विजय सिंह क्षत्रिय सम्बन्धी अनेक समस्याओं को लेकर संघर्ष करने पर तत्पर हैं और कश्मीर से कन्या कुमारी तक का क्षत्रिय समाज उनके नेतृत्व में पूर्ण आस्था रखता है।

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा कई दशको से 'आरक्षण आर्थिक आधार पर हो ना कि जातिगत आधार पर' इस मांग को लेकर केन्द्रीय व प्रदेश सरकारों से मांग करती रही है। इस सम्बन्ध में सन् 2000 से लगभग 10 लाख हस्ताक्षर जिला कलैक्टर व माननीय राज्यपालों के माध्यम से तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति को दिया गया। अक्टूबर 17, 2010 को अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री महाराजा दिग्विजय सिंह (वांकानेर) ने जम्मू से कन्याकुमारी तक राष्ट्रीय रथ यात्रा को झण्डी देकर शुरु किया। उपरोक्त राष्ट्रीय रथ यात्रा आरक्षण को आर्थिक आधार पर दिये जाने, देश में व्याप्त भ्रष्टाचार को समाप्त करने व किसानों को कर रहित उद्योग नीति के तरह सुविधाएं दिये जाने को लेकर जम्मू कश्मीर, हिमाचल, पंजाब हरियाणा, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़,

आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक व तमिलनाडु से गुजरती हुई 14 जनवरी, 2011 को कन्याकुमारी पहुंची और कन्याकुमारी से तमिलनाडु, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान इत्यादि प्रदेशों से गुजर कर 11.3.2011 को दिल्ली रामलीला मैदान पहुंची और 12.3.2011 को राजघाट दिल्ली पर धरना दिया। इसके पश्चात 13.3.2011 को जंतर मंतर दिल्ली पर प्रदर्शन करने के बाद उपरोक्त मांगों को लेकर भारतवर्ष के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभा के स्पीकर, लोकसभा में विपक्ष के नेता व श्रीमती सोनिया गांधी को माँग पत्र प्रस्तुत किया गया, जिसमें माँग की गई कि देश के संविधान में संशोधन किया जाये और देश के गरीबों को सही आजादी देने के लिए आर्थिक आधार पर आरक्षण लागू किया जाये। उपरोक्त राष्ट्रीय रथ यात्रा का देश के सभी प्रदेशों में सभी स्वर्ण जातियों व आरक्षित जातियों द्वारा भव्य स्वागत किया गया और उपरोक्त मांगों का भरपूर समर्थन किया गया।

आर्थिक आधार पर आरक्षण दिये जाने की माँग को लेकर अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने 28 दिसम्बर 2011 से 2 जनवरी 2012 तक जंतर मंतर दिल्ली पर निरन्तर धरना दिया, जिसमें अग्रवाल समाज, ब्राह्मण समाज, पंजाबी समाज, कायस्थ समाज व अन्य समाज के लोगों ने भाग लिया।

6 मई 2012 को अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने तत्कालीन थल सेना अध्यक्ष जनरल वी.के. सिंह के समर्थन में देश में व्याप्त भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए ऐतिहासिक जनसभा व धरने में भाग लिया जिसमें विशेष रूप से युवराज केसरी सिंह वांकानेर ने सभा को संबोधित किया।

भावी योजनायें :-

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का राष्ट्रीय कार्यालय बेला शक्ति सती मन्दिर झण्डेवालान दिल्ली में प्रारभ हो चुका है और उसके भावी निर्माण के लिए महासभा वचनबद्ध है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक जिले में महिला छात्रावासों का निर्माण, आर्थिक आधार पर आरक्षण लागू करवाना व देश में संविधान में संशोधन करवाना, क्षत्रिय नवयुवकों को शिक्षा व रोजगार के लिए प्रोत्साहित करना इत्यादि अनेक भावी योजनाओं पर कार्य किया जायेगा।

फ्रांसीसी और अंग्रेजों में भारत वर्ष के राजपूत राजाओं को आपस में लड़ाकर राज किया। क्षत्रियों ने आपसी मनमुटाव व मतभेद के बावजूद अपनी संस्कृति राष्ट्रीय मान और सम्मान की रक्षा के लिए पहले मुस्लिम शासकों के विरुद्ध और बाद में अंग्रेजी साम्राज्य और उनके आंतक अन्याय व जुर्म के खिलाफ घोर संघर्ष करते हुए सहर्ष अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। 1947 तक एक तिहाई देश में राजपूत राजाओं का राज था और उन्होंने उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब, आन्ध्र प्रदेश इत्यादि प्रदेशों में बड़े जमींदारों के साथ मिलकर समाज के उत्थान के लिए अनेक कार्य किये। आजादी के बाद राजपूत राजाओं और बड़े जमींदारों ने राष्ट्रहित में अपनी हजारों साल से चली आ रही अपनी रियासतों का विलय कर दिया और उसकी एवज में उन्हें नाम मात्र ही मिला।

आज भारतवर्ष में ही नहीं विश्व में भी राजपूत समाज ने अनेक नए शिक्षण संस्थान, छात्रावास, यात्रीनिवास, हैरीटेज होटल्स, स्कूल, कॉलेज एवं शोध संस्थान शुरु किए हैं और इसके साथ साथ उद्योग, व्यापार, भवन निर्माण परिवहन व्यवसाय एवं प्रशासनिक व नागरिक सेवाओं के साथ साथ थल सेना, वायु सेना, नेवी तथा पुलिस में भी महत्वपूर्ण

योगदान प्रदान किया है । अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अमरीका, यू.के., अफ्रीका व दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में भी विभिन्न समाज के संगठनों से सम्पर्क स्थापित करके समाज के संगठनों को मजबूत किया है ।

क्षत्रिय संसार में सदा धर्म के प्रति, जनता के प्रति और परलोक में ईश्वर के प्रति उत्तरदायी रहा है । क्षत्रिय का धर्म सूरज की तरह समुद्र से जल लेना और बादल की तरह बरस कर खाली हो जाना है । क्षत्रिय सदा छल अन्याय, अधर्म और अंधेरे के विरुद्ध खड़ा होता है । दुष्टों का दलन और सज्जनों व कमजोर की रक्षा व लोक रक्षा क्षत्रिय का परम धर्म है वह देश, धर्म, संस्कृति व परम्पराओं की रक्षा के प्रति उत्तरदायी रहा है । यदि क्षत्रियों के चरित्र को इतिहास से निकाल दिया जाये तो इतिहास शून्य हो जायेगा । यही हाल संस्कृति और धर्म ग्रन्थों का होगा । जब क्षत्रियों की भुजाओं में शक्ति थी हृदय में दृढ़ता और साहस, मस्तिष्क में ज्ञान और धैर्य तथा प्रकृति में वीरत्व व पराक्रम था, तब तक आज के ये शासक क्षत्रियों के स्वामी भक्त प्रजाजन बने रहें, लेकिन अब उन्हीं द्वारा क्षत्रियों को समूल नष्ट करने की साजिश रची जाने लगी ।

आज विसंगति है कि यह कौम संगठित नहीं है, इसका कोई नेता नहीं है, नेतृत्व विहिन, दिशाहीन, भटकाव और टकराव के बीच झूलती इस कौम का राम ही मालिक है । इसके लिए दो रास्ते हैं – 1. संगठित होकर उठने और नेतृत्व संभालने का, जिसके लिए मनोबल और पुरुषार्थ चाहिए और दूसरा अपनी पहचान खोकर नष्ट हो जाने का । दूसरे रास्ते से पहला रास्ता सही है । आज क्षात्र धर्म को फिर से स्थापित करने की आवश्यकता है ।

सन 19 अक्टूबर, 1997 को लाल किला मैदान पर ऐतिहासिक “शताब्दी समारोह” के अवसर पर आयोजित राजपूत विशाल रैली, 1998 का बेगम हजरत गंज महल पार्क लखनऊ का विशाल क्षत्रिय मिलन समारोह, सन 2000 का लाल परेड ग्राउंड भोपाल में अखिल क्षत्रिय महासभा द्वारा आयोजित राष्ट्रीय क्षत्रिय मिलन समारोह व आर्थिक आधार पर आरक्षण की मांग को लेकर कश्मीर से कन्याकुमारी और कन्याकुमारी से रामलीला मैदान, नई दिल्ली तक ऐतिहासिक राष्ट्रव्यापी रथ यात्रा, जंतर मंतर दिल्ली में व राज घाट दिल्ली में महासभा द्वारा अनेकों बार किये गये आंदोलन, जोधा अकबर सीरियल के विरुद्ध चण्डीगढ़, दिल्ली व देश में अनेकों स्थानों पर जुलाई 2013 व अगस्त 2013 में विशाल रैली व आन्दोलन इत्यादि महासभा के अथक प्रयास और संगठन के प्रचार उपरान्त क्षत्रियों में जागृति एवं महासभा के प्रति विश्वास उत्पन्न हुआ । क्षत्रिय समाज की अपेक्षाओं व आकांक्षाओं के अनुरूप सेवा के भाव से निरन्तर प्रयासरत है ।

क्षत्रिय कभी अधर्म, अन्याय, अत्याचार, असत्यता, धूर्तता एवं उत्पीड़न के सामने झुका नहीं है । महाराणा प्रताप का चरित्र सभी के सामने है । आज नई पीढ़ी को नेतृत्व संभालना है, अपना नेता स्वयं बनना है और खुद अपना रास्ता निकालना है । वक्त की मांग और देश व समय का तकाजा यही है कि हम जड़ता त्याग कर उठे, संगठित हो आगे बढ़े, तभी क्षत्रिय धर्म की जय विजय हो सकती है । उत्थान व पतन वक्त के तेवर है, परिवर्तन प्रकृति का नियम है, जो कल था आज नहीं है जो आज है वह कल नहीं रहेगा । परन्तु हर स्थिति में अस्तित्व को बचाने के लिए उपयोगी बने रहना अति आवश्यक है, जो अनुपयोगी हो जाते हैं उन्हें वक्त किनारे कर देता है ।

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के उद्देश्य

1. क्षत्रिय धर्म, संस्कृति व परम्पराओं की रक्षा ।
2. शिक्षा ।
3. देश और विदेश में व्याप्त विभिन्न क्षत्रिय संगठनों को एक सूत्र में जोड़ कर उनका नेतृत्व करना ।
4. क्षत्रिय एकता एवं सामाजिक उत्थान के लिए कार्य करना ।
5. देश की संस्कृति, सभ्यता व राष्ट्र की रक्षा के लिये कार्य करना ।
6. भ्रष्टाचार, अन्याय व शोषण के खिलाफ स्वच्छ वातावरण कायम करना ।
7. क्षत्रिय महिलाओं को आरक्षण व अन्य लाभ प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना ।
8. क्षत्रियों के आर्थिक उत्थान के लिए उनको शिक्षित करना ।
9. पंचायत से संसद तक नेतृत्व करने के गुण पैदा करना ।
10. आर्थिक आधार पर आरक्षण लागू करवाने के लिए आन्दोलन करना ।
11. सामाजिक बुराईयों जैसे मृत्यु भोज, दहेज व फिजूलखर्ची को समाप्त करना ।

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा की भावी योजनाएँ:—

1. देश की राजधानी दिल्ली में क्षत्रिय इतिहास के शोध संस्थान के लिये भवन बनवाना और उसमें संग्रहालय खोलना, सभी कुलों की देवियों की मन्दिर में स्थापना करना ।
2. आधुनिक साइबर मीडिया के द्वारा देश व विदेश के सभी क्षत्रिय संगठनों से सम्पर्क स्थापित करना ।
3. क्षत्रियों के लिए डायरेक्टरी व मासिक व दैनिक पत्रिका इत्यादि छपवाकर वितरित करना ।
4. शिक्षण संस्थान, औद्योगिक संस्थान, अतिथि गृह व अन्य सुविधा जनक संस्थान खुलवाना ।
5. युवा संघ को शिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण शिविर लगवाना ।
6. क्षत्रिय समाज में महिला संगठन जैसे महिला मौर्चा इत्यादि बनवाना व उसकी सहायता करना ।
7. क्षत्रियों को एक दूसरे के विरुद्ध चुनाव लड़ने से रोकना ।

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का दिवंगत महानविभूतियों को उनके अविस्मरणीय योगदान के लिए शत शत नमन!!

राजा बलवन्त सिंह जी आवागढ़ (उ.प्र.) संस्थापक अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ।

राजा उदय प्रताप सिंह जी भिंगा (उ.प्र.)

महारावल लक्ष्मण सिंह जी डुंगरपुर (राजस्थान)

श्रीमान आयुवान सिंह जी (राजस्थान)

ठाकुर उमराव सिंह जी कोटला (उ.प्र.)

चौधरी केशो दास सिंह जी पठानकोट (पंजाब)

राजा देवी सिंह मंडावा (राजस्थान)

श्री राम दयाल सिंह जी ग्वालियर (म.प्र.)

श्रीमान तन सिंह जी जोधपुर (राजस्थान)

ठाकुर कोक सिंह जी ग्वालियर (म.प्र.)

ठाकुर भोला सिंह जी इलाहाबाद (उ.प्र.)

संरक्षक :

महाराज गज सिंह (जोधपुर)

डा. कर्ण सिंह (जम्मू कश्मीर)

महाराजा रघबीर सिंह सिरौही (राजस्थान)

राजा दिग्विजय सिंह भूतपूर्व मुख्यमंत्री (म.प्र.)

श्री गुरचैन सिंह चारक (जम्मू कश्मीर)

OBJECTIVES

1. Upholding Kshatriya ethics and traditions.
2. Facilitating education to all the members of Kshatriya Samaj.
3. Acting as an apex body for effective coordination between Kshatriya organizations spread everywhere.
4. Bringing about unity and social upliftment
5. Working for serving the cause of defending the nation and its natural and cultural heritage.
6. Facing the problems of corruption and exploitation in the society to ensure clean public life.
7. Activating Kshatriya ladies to avail of all advantages of reservation offered to women.
8. Keeping pace with the current trend of a market economy in improving the economic status of the Kshatriyas.
9. Having inherited the qualities of leadership, Kshatriyas must be in position in all political parties from Panchayats to Parliament.
10. Reservations should be extended to all economically weaker sections of the society.
11. Promoting social reforms against dowry and expenses after death.

INTRODUCTION

The Kshatriyas are an order from whom were born saints like Ram Krishana, Vishvamitra, Buddha, Jain Tirthankars and Sikh Gurus.

The martial quality of the Kshatriya Community is renowned throughout the world in warfare, in the act of fairplay and forgiveness which has been an integral part of its tradition. It is for these qualities which have made history.

Moreover, the qualities of giving one's life to keep a promise and giving protection to those who seek it, are legendary in the folklore of India and have been the foundation of the Kshatriya Ideology.

Samarat Ashok, Samrat Vikramaditya, Raja Bhoj, Samrat Prithviraj Chauhan, Samrat Krishnadeva Raya, Maharana Partap, Chhatrapati Shivaji & Ram Prasad Bismil are only some of these glorious names.

It was the Kshatriyas who stood up against the Muslim on roads and many battles were fought to defend the culture and beliefs of the society. Even in the struggle for independence in 1857, Kshatriya warriors despite their inter-necine warfare, had fought the outsiders and many 'fell' on the battlefield. In that period the 'Kshatriya Hitkarni Sabha' had recorded strong opposition against the imperialistic expansion of the British and revolts were organised in Azamgarh, Gorakhpur, Balia, Chhapra and in Punjab.

AKHIL BHARTIYA KSHATRIYA MAHASABHA

In 1897 Raja Balwant Singhji of Awagadh in coordination with Thakur Umarao Singh ji of Kotla, Raja Uday Pratap Singhji of Bhingra took leadership in registering the Akhil Bhartiya Kshatriya Maha Sabha on the 19th Oct 1897 to initiate, for the first time in the history of India of creating a platform to promote the cause of the Kshatriyas. They even proposed to launch a news letter called 'Rajput Monthly' on the 20th Feb 1898 under the presidentship of Judge Babu Sanwal Singhji of Banaras. The Maha Sabha had its first conference in the Rajput Boarding House at Agra. Thereafter, Maharaja Pratap Singhji of Jammu and Kashmir sponsored the launching of an Urdu Publication called the Rajput Gazette as a fortnightly from Lahore. It was edited by Thakur Sukh Ram Das Chauhan. Thereafter creating awareness through meetings and publicity in many parts of India were initiated.

In the field of education, Raja Uday Pratap Singhji of Bhingra built a College in Varansai named after himself Raja Balwant Singhji of Awagadh set up a college in Agra Sir Pratap Singhji of Idar set up the 'Chaupansni School' for Rajputs in Johpur and several schools and boardings were setup by Former Rajput rulers in different states of India to give special attention to their Rajput brethren. So, were the princely schools at Rajkot, Ajmer, Lahore, Raipur and Indore set up.

In the field of social upliftment, in the course of meetings and gatherings throughout India, directions were given to raise the level of education, to overcome the practice of debilitating vices, shook up the community from slothfulness and in general gave inspiration to the society right down to the Panchayat level. Most of all the Akhil Bhartiya Kshatriya Maha Sabha has played a vital role in bringing about effective coordination between thousands of Kshatriya Organisations at the Taluka district and state level for grassroot involvement.

THE KSHATRIYAS BEFORE INDEPENDENCE

The history of India would have been written differently, had the Kshatriyas not played a vital role. Protecting the frontiers, defending the weak and establishing justice were the objectives of Kshatriya leadership throughout the history of India. The epics of the Ramayana and the Mahabharata reflect the most glorious chapters of the history of India and they represent the essence of Kshatriya Philosophy. Protecting the weak from the exploiter was what gave them the position to be accepted as rulers of the entire society. The people believed that only a Kshatriya can enforce law and order. Moreover, the generosity and tradition of giving of alms further endeared the Kshatriya rulers to the people. A thousand names of the great Kshatriyas in the history of India could be listed who made an impact and influenced the life style of the people.

Much of the Kshatriya down-fall came because of their steadfastness of sticking to the truth, protecting the weak and standing by those who had be-friended them, the inroad of the Moguls, swept over India with fanaticism followed by the British and the French who used their diplomatic skills in dividing the Kshatriya rulers by putting one against the other that, India became subjugated and over ruled by foreign powers. It was only because of lack of unity between Kshatriya powers that India lost its independence and thereby its cultural heritage of the past. One third of India continued to be ruled by Princes until independence and most of them were Kshatriyas. The 20th Century did bring about spontaneous support offered by the Kshatriya rulers for enhancing the well being of their kith in their own areas. The Kshatriya Zamindars of Uttar Pradesh, Bihar, Punjab and Andhra Pradesh also helped in enhancing their well being.

THE KSHATRIYAS AFTER INDEPENDENCE

Within a year after independence in 1947, the Princes of India handed over the reigns of their administration to the people of India to meet with the demands of social progress and democracy based on adult franchise. It must not be forgotten that the greatest sacrifice that any community has made after independence in achieving this goal has been the Kshatriyas. Those who were princes gave up their traditional rulership which had been enjoyed for thousands of years and hundreds of generations without bloodshed, those who were Zamindars did similar. Even the compensation they got was only notional and even these are now forgotten, Therefore, it must always be remembered that when the time comes and where there is a peoples' demand, no other community in India will come forward to make such sacrifices and contributions as Kshatriyas have done. In all other corners of the world wherever such revolutions have taken place it has been with bloodshed and if there was no bloodshed in India, it was only because of the magnanimity, sagacity and the commonsense which every Kshatriya is endowed with.

In the democratic setup also, the Kshatriyas have played a vital role right from the Panchayat level to the Prime Minister ship and it is well known that whether a Kshatriya has remained in political office for long or short or whether he has been successful in his career or not he always stood by his principles of being just and keeping scrupulously away from corrupt practices.

Rajputs converted to islam are now proudly invited to be affiliated as Muslim Rajput organizations both in India and abroad. Organizationally, in fund collection, the Kshatriya may lag behind which is obviously seen in the performance of the Kshatriyas social organizations today.

INTERNATIONAL COORDINATION

The spirit of adventure is ingrained in the Kshatriya ethos which has taken them to every corner of the globe more particularly the USA, UK, Africa and South East Asia, Where the Rajput Associations are all active and ripe for effective coordination both inter se and with sister organisations in India. The Akhil Bhartya Kshatriya Mahasabha (ABKM) strives to establish a meaningful rapport with all such organizations spread around the world under the dynamic leadership of its National President Former Union Minister of India Maharaja Dr. Digvijay Singh ji (Wankaner).

Important Meetings during the term of National President of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha and Former Speaker Rajasthan Vidhan Sabha Sh. Luxman Singh Dungarpur :

A National Convention of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha was held at Doodh Talai Maidan Ujjain . Babu Ram Narayan Singh Ji (Hazari Bagh, Bihar) Former Member Parliament presided over the convention. The most prominent national leaders from all over India participated in the above said Samelan. A National Kshatriya leader Ayuvan Singh proposed the name of Maharawal Luxman Singh Dungarpur for the office of National President of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha. The proposal was warmly approved by the whole house with one voice. A next Convention of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha was held in district Saharnpur U.P. and the same was presided over by National President Maharawal Luxman Singh Dungarpur.

Rao Krishan Pal Singh Avagarh M.P. was elected senior Vice President and Thakur Kesho Dass Pathankot as Vice President and Thakur Ram Dyal (Gwalior) as General Secretary, Maharawal Dungarpur was the President ABKM, Rajasthan till he was elected as National President.

A three day National Convention was held at Nangal Township Punjab and Thakur Keshav Das of Pathankot Punjab was the organizer and the Convention was presided over by the National President Maharawal Luxman Singh Dungarpur. A number of resolutions for the welfare of Kshatriya Community were unanimously passed.

The next important Samellan of ABKM was held at Damoh in Madhya Pradesh in the year 1963.

Another historical three day National Convention was held at Sagar (Madhya Pradesh) in the year 1965. The next three day National Convention of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha was held on 25,26, 27 February 1968 at Chittorgarh the place of worship and honour for the Kshatriya Community. All prominent national leaders participated and the convention was presided over by Maharawal Luxman Singh National President. It was unanimously resolved to unite the community and strengthen the organization.

The next three day National Convention of the ABKM was held on 28, 29, 30 April 1973 at Chattarpur in the state of Madhya Pradesh.

The next National Convention of the ABKM was held in 1974 at Sonpur in the state of Bihar under the presidentship of Maharawal Luxman Singh.

The next Samellan of ABKM was held at Pathankot in the year 1978 on the invitation of Thaku Keshavdas of Pathankot Punjab.

Another meeting of the national executive was held on 29, 30, 31st May 1978 at Lalitpur Uttarpradesh under the presidentship of National President of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha and the then speaker of Rajasthan Vidhan Sabha.

Similarly the next convention of ABKM was held at Singramau(Jonpur U.P) on the invitation of Raja Shri Pal Singh of Singramau. Maharaja Gaj Singh Jodhpur, Maharana of Mewar Mahender Singh and Former Union Minister Dr. Karan Singh and many national Kshatriya leaders participated and number of resolutions were unanimously passed.

A very historical Convention of the ABKM was held at Daak bangla maidan sonpur Bihar in the year 1984. Dr Karan Singh Former Union Minister was the Chief Guest and Maharawal Luxman Singh Dungarpur presided over the function. The most important leaders Maharana Mewar Mahender Singh, Maharaja Jodhpur, Gaz Singh Raja Shripal Singh Singramau, Raja Devi Singh Mandawa Former member Parliament Thakur Keshav Das Punjab etc. participated in the Sammelan. It was unanimously resolved to demand reservation on economic basis rather than on caste basis. It was further resolved to awaken the people against caste base reservation.

On the invitation of Amar Kshatriya Sabha Jammu a National Convention of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha was held at Jammu on 28, 29, 30 May 1988. the convention was presided over by the National President of ABKM and the Former speaker of Rajasthan Vidhan Sabha. Maharawal Luxman Singh Dungarpur, Raja Devi Singh Mandawa Thakur Keshav Das of Punjab, Shri Gulchain Singh Charak J& K and many other prominent national leaders participated. This was the last national convention of the Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha which was presided over by National President Maharawal Luxman Singh Dungarpur because after this he fell ill and was under treatment at Mumbai.

Under these unavoidable circumstances Raja Devi Singh Mandawa former Member Parliament, Thakur Keshav Das Punjab, Kok Singh Bhadoria National General Secretary and other prominent leaders got the appointment of Yuvraj Dr. Digvijay Singh (Wankaner), Former Union Minister as the National Working President of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha. Unfortunately Maharawal Luxman Singh Dungarpur National President of ABKM passed away on June 06, 1989 on the eve of Maharana Pratap Jayanti. After a month, in August 1989, an important and emergent meeting was called North Avenue, the residence of Sh. Shankar Singh Baghela, Member of Parliament, Gujrat at Delhi. In the meeting, Yuvraj Dr. Digvijay Singh (Wankaner), Former Union Minister was unanimously elected the President of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha.

Maharawal Luxman Singh Dungarpur Former Speaker Rajasthan Vidhan Sabha as the most dynamic National President of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha conducted a large number of meetings at the level of village, taluka, district, state and nation throughout the country for the development and upliftment of Kshatriya Samaj.

Besides the above said meetings Maharawal Luxman Singh Dungarpur held meetings at Nangal, Pathankot, Rajpura, Sayed Kheri, Ropar, Chandigarh etc in Punjab and Thanesar (Kuruksheetra), Karnal, Gharonda, Mulana, Barara, Bhari, Bhiwani and Jind etc.

Similarly he travelled widely in Rajasthan, U.P., Madhya Pradesh, Bihar, and North to South throughout the country.

The National President of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha & Former Union Minister Dr. Digvijay Singh after being elected as the National President held meetings with the prominent Kshatriya leaders throughout the country for the strengthening of the organization & for preparation of Centenary Celebration which was to be celebrated at Delhi.

Raja Devi Singh Mandawa, National Working President Thakur Bhola Singh, Sh. Gulchain Singh Charak, Thakur Keshav Das , Shashi Kant Panwar, Thakur Manmohan Singh MLA Sahajahpur Madhya Pradesh, Vijender Singh Sisodiya, Rajender Singh Bhadoria, Vijay Singh Parihar, Anil Singh Chandel M.P., Sh. Jagat Pal Singh, Sh. Prakash Singh Rana, Sh. Jaipal Singh Sisodiya, Sh. Jai Singh Rathore, Surat Sing Bhadoria, Sahedev Singh Tomar, Smt. Anjana Kanwar Delhi, Thakur Devender Singh, Sh. Anand Mohan, Mrs. Lovely Anand M.P., Swami Suresha nand,, Sh Mahener Singh Tanwar, Col. Devender Singh Veer Chakar, and many other prominent Kshatriya leaders worked hard for the success of the coming Centenary Celebrations.

CENTENARY CELEBRATIONS

Despite several shortfalls such as those of Kshatriyas being spread out throughout India and having always been leaders of society with strong individual commitments and not having worked in unison in the historical past; it was difficult for an All India organization like ours to unite all the Kshatriyas under one banner. Despite that, 100 years have passed since the organization has attained several landmarks which have given a sense of pride to the whole community.

There was a demand from all states of the country to celebrate the centenary celebrations of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha on 19th of October 1997 as the Mahasabha was founded by Maharaja Balwant Singh Avagarh on 19th of October 1897. The National Executive of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha under the presidentship of Former Union Minister and National President Yuvraj Dr. Digvijay Singh (Wankaner), in its meeting at Varanasi U.P. and Haridwar Uarakhand unanimously decided to celebrate the Centenary Celebrations on 19th October 1997 at Delhi.

The National executive of the Mahasabha in its meeting at Maharana Pratap Bhawan Kurukshetra on 15-16 April 1995 decided the programme and allocation of duties to the office bearers of the Mahasabha in this connection and decided to constitute a Shatabdi Samaroh Samiti headed by Yuvraj Dr. Digvijay Singh (Wankaner), National President & Raja Devi Singh Mandava National Working President of the Mahasabha. A next meeting of the Mahasabha was held at Prachin Shiv Mandir Delhi on 25th June 1995 and another meeting at Rajgiri Bihar on 05-06 August 1995 on the invitation of Shri Anand Mohan and Mrs. Lovely Anand M.P. Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha organised a number of meetings in Jaipur (Rajasthan), Delhi, Bhopal (Madhya Pradesh) on 30th March 1997 at Rotari Sewa Sadan New Rest House Bhopal, Krishna Memorial Hall Patna, Delhi 27-28 June 1997 at Swami Narayan Mandir Bela Road Civil Lines New Delhi, at Surat on 24-25 May 1997 on the invitation of Sh. Tanvir Singh Jhala, President of ABKM Gujarat and many other places in Haryana, U.P. and Rajasthan surrounding Delhi under the dynamic leadership of Yuvraj Dr. Digvijay Singh (Wankaner), Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha Celebrated its Centenary Celebration, on 19th Oct 1997 at Lal Kila Maidan Delhi, under the dynamic leadership of its National President, Former Union Minister of India, Yuvraj Dr. Digvijay Singh (Wankaner), Gujarat and National Working President of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha and Former Member of Parliament Raja Devi Singh Mandava

On this occasion, all the prominent Kshatriya leaders of India and abroad including MPs, Ex. MPs, Ex. Ministers, Rajas and Maharajas including five the then Chief Ministers namely Sh. Digvijay Singh, Hon'ble Chief Minister, Madhya Pradesh

Sh. Bhairon Singh Shekhawat, Hon'ble Chief Minister, Rajasthan

Sh Shanker Singh Vaghela, Hon'ble Chief Minister, Gujarat

Sh Virbhadra Singh, Hon'ble Chief Minister, Himachal Pradesh

Sh. Dharam Singh, Hon'ble Chief Minister Karnataka

Sh. Rana Pratap Singh Rane, Hon'ble Chief Minister Goa

Sh. Rajnath Singh, Hon'ble Home Minister of India

Sh. Jagdambika Pal, Ex. Chief Minister Uttar Pradesh and more than fifty royal princes and dignitaries from India and abroad participated,

Sh Digvijay Singh ji, the then Chief Minister of Madhya Pradesh, was the Chief Guest and Dr. Karan Singh Former Union Minister of India was the Guest of Honour. On this occasion, it was unanimously resolved to unite and strengthen the organisation and unite the Kshatriyas of India and abroad for the social economic cultural, educational and over all development of the Samaj. More than 5 lacs Kshatriyas attended the above said historic Sammelan. Raja Digvijay Singh, Chief Minister of Madhya Pradesh put his efforts for making the celebration more successful.

The National Kshatriya Milan Samaroh, 1998

The National Kshatriya Milan Samaroh was celebrated at Begam Hajrat Mehal Park, Lucknow (U.P) on 8 Nov 1998 under the leadership of its National President Yuvraj Dr Digvijay Singh (Wankaner), and its National Vice President Thakur Bholu Singh, National Working President Raja Devi Singh Mandava, Dr Karan Singh Former Union Minister was the Chief Guest and Jagadambika Pal Former Chief Minister of U.P, Raja Bhaiya Former Minister, Sanjay Singh Amethi Former Union Minister and a number of National and State Kshatriya leaders attended the above said Sammelan. A number of resolutions for the welfare and overall development of the community were passed.

The National Kashitriya Milan Samaroh, Bhopal (2000)

On Oct 15, 2000 a Vishal National Kshatriya Milan Samaroh of Akhil Bhartiya Kashitriya Maha Sabha was celebrated at Lal Parade Ground Bhopal under the leadership of Raja Digvijay Singh, the then Chief Minister of Madhya Pradesh in which Aadi Shankaracharya of Kanchi Matha, Yuvraj Dr Digvijay Singh (Wankaner), National President, Thakur Bholu Singh National Working President, and all prominent national and state leaders of Kshatriya Maha Sabha as well as lacs of Kshatriyas participated in the Sammelan and it was resolved to strengthen the organisation and Samaj and to give up social evils like Mrityu Bhoj, Dowry and other unnecessary expenses etc.

Akhil Bhartiya Kshatriya Maha Sabha has organised the meetings of national executive, national core committee, national sammelan etc. in more than twenty States of India i.e J&K Himachal, Punjab, Haryana, Chandigarh, Delhi, U.P, Rajasthan, M.P, Bihar, Jharkhand, Chhatisgarh, Orissa, Bengal, Gujrat, Maharastra, Karnatka, Tamilnadu, Andhra Pradesh, etc. for awakening and uniting the community throughout the country after strengthening the organization i.e. Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha.

NATION-WIDE RATH YATRA FROM KASHMIR TO KANYA KUMARI DEMANDING RESERVATION ON ECONOMIC BASIS RATHER THAN ON CASTE BASIS FROM OCTOBER 17, 2010 TO MARCH 13, 2011

Akhil Bhartiya Kshatriya Maha Sabha resolved and demanded since 1980 that the reservation should be given on economic basis rather than on caste basis. In the year 2000, a memorandum containing lacs of signatures was submitted to Hon'ble President of India through District Collectors, demanding reservation on economic basis rather than on caste basis.

A Nation-wide Rath Yatra from Jammu to Kanyakumari for reservation on economic basis was launched from 17/10/2010 to 13/3/2011 under the dynamic leadership of its National President Former Union Minister Yuvraj Dr. Digvijay Singh (Wankaner).

Maharaja Dr. Digvijay Singh National President flagged off the Rath Yatra from Historic place Amar Kshatriya Sabha Bhawan Jammu on 17/10/2010 on the eve of Dussehra day demanding reservation on economic basis instead of caste basis and for eradication of rampant corruption and agriculture be given tax free facilities like industry. On this occasion Sh. Mahender Singh Tanwar, National Working President, Swami Sureshanand Sarankshak of Mahasabha, Sh. Shashikant Panwar, Senior Vice President, Major General Bikram Singh, Vice President,

Sh. Gulchain Singh Charak, Senior Vice President and Former Minister J& K Sh. Prem Pal Pundeer, General Secretary of the Mahasabha, General G.S Jamwal & Sh. Narain Singh Jamwal President of Amar Kshatriya Sabha, Thakur Devender Singh, President of Bihar, Sh. Vijay Singh Parihar, President Madhya Pradesh and other prominent leaders of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha were present. Rath Yatra reached Kanya Kumari on 14/01/2011 passing through J&K, Himachal, Punjab, Haryana, Utrakhand, U.P, Madhya Pradesh, Bihar, Jharkhand, Chhattisgarh, Andhra Pradesh, Karnataka, Tamilnadu, and there after reached Delhi on 11/03/2011 passing through Tamilnadu, Karnataka, Maharastra, Gujarat, Rajasthan and Uttar Pradesh, etc. on 11/03/2011.

Nation wide Rath Yatra was given warm welcome and cooperation throughout the country for implementing the above said demands. A Dharna was arranged at Rajghat Delhi on 12/03/2011 under the leadership of Maharaja Dr. Digvijay Singh (Wankaner), National President of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha and Ms Anjana Kanwar President Delhi State of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha and many national & state leaders of Mahasabha were present. A meeting was held at Ram Leela Ground Delhi and thereafter a demonstration at Jantar Mantar Delhi was held and a Memorandum was given to Hon'ble President and Prime Minister of India, Hon'ble Speaker of Lok Sabha, Leader of Opposition in Lok Sabha and Smt Sonia Gandhi, Chair Person of U.P.A. The above said Rath Yatra was given warm Welcome by all sections of society

throughout the country. Even the caste getting reservation on caste basis also supported this movement as they knew that only certain families are benefited by the caste-based reservation. Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha staged a Dharna at Jantar Mantar demanding reservation on caste basis on 13-08-2011.

Akhil Bharatiya Kshatriya Mahasabha alongwith Aggrawal and Brahmin and Punjabi communities staged a Dharna at Jantar Mantar, New Delhi from 27 December 2011 to 02 January 2012 for the above said demands and again a memorandum was submitted to the above mentioned dignitaries. Besides this a demonstration and Dharna was arranged a numbers of times since March 2011 till 2015. A Vishal Dharna was staged on 24-11-2015 by Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha demanding reservation on economic basis. The abovesaid Dharna was presided over by National Working President, Sh. Mahender Singh Tanwar.

Sh. Anil Singh Chandel, National General Secretary, Sh. Vijay Singh Parihar, President Madhya Pradesh, Sh. Bhim Singh President Panther Party Jammu & Kashmir, Sh. Sukhdev Rana, President U.T. Chandigarh, Smt. Anjana Kanwar, President Delhi State and many other leaders were present. A memorandum to hounrable President & Prime Minister of India was given to this effect on that occasion.

It is only after this movement launched by Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha, that the Government of Haryana passed a bill in legislative assembly to the effect that 10% reservation on economic basis in Haryana will be given to Rajput, Brahmin, Punjabi and Aggarwal community in the government services etc. Not only this after the nation-wide Rath Yatra Former Chief Minister of Madhya Pradesh and General Secretary AICC, Digvijay Singh Miss Mayawati Former Chief Minister U.P., Sh. Om Prakash Chautala Former Chief Minister Haryana and a large number of national and state leaders of different political parties advocated "the reservation should be given to the poor on economic basis rather than on caste basis". Recently a similar decision giving reservation on economic basis was taken by the Government of Gujarat. Other general castes like Aggarwal, Brahmin, Punjabis and Kayasth etc. started demanding reservation on the economic basis. Now there is a national debate on this demand. This is the greatest achievement of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha for the cause of National Unity and solidarity, harmonious relations between different castes and for the overall welfare of the coming generations so that they may not be victimized due to caste-based reservation.

A national convention of ABKM was held at Darul Safa Lucknow and the election of national executive was held on 16th and 17th April 2010.

Maharaja Dr. Digvijay Singh (Wankaner), Former Union Minister was again unanimously elected as National President and Sh. Mahender Singh Tanwar Haryana was unanimously elected as National Working President of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha and Sh. R.N. Singh, Kanpur and Prem Pal Pundeer, Mumbai were elected General Secretaries. Besides this, a national executive was unanimously constituted on this occasion.

The meetings of ABKM were held at Delhi, Motihari (Bihar) and Una (HP) and a historic decision was taken in the meeting of national executive at Motihari (Bihar) to launch a movement against reservation on caste basis and in favour of a reservation on economic basis as well as against the rampant corruption in the country and for bringing tax free agriculture with the industry like facilities. National Executive of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha reached a place in Motihari in the month of July 2010 from where the father of the nation Mahatama Gandhi had launched a non cooperation movement against the British Government and violated article 144 and stayed there for more than 8 months. The National Executive of ABKM under the dynamic leadership of Former Union Minister and National President Maharaja Dr. Digvijay Singh (Wankaner), resolved to launch a nation-wide movement including nation wide Rath Yatra for implementing the demand for reservation to the poor on economic basis throughout the country.

IMPORTANT MEETINGS FROM 1997 TILL TODAY

A meeting of national executive of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha was held on 15-16 April 1995 at Kurukshetra. Maharaja Digvijay Singh (Wankaner) presided and as decided in 1994 at Varanasi and Haridwar, duties were allocated for the Centenary Celebration which was to be held on 19th of October 1997 at Delhi.

Next meeting of the national executive was held at Delhi on 25-06-1995, 23-08-1995 & 14-11-1995 at Prachin Shiv Mandir. A meeting of the Shatabadi Samaroh Samiti was held at Rajasthan House Prithvi Raj Road New Delhi & some important decisions regarding Centenary Celebrations were taken. A meeting of ABKM of executive was held at Rajgiri, Bihar on 05-06 August 1995 on the invitation of Shri Anand Mohan and his wife Lovely Anand, Member Parliament.

In the year 1996 a meeting of the national executive was held on 07th March and beside this a number of meetings were held at Prachin Shiv Mandir Delhi, Bhopal, Meerut, Karnal, Chandigarh and many other places surrounding Delhi in connection with the Centenary Celebrations.

The Next meeting of national executive committee was held on 30th March 1997 at Rotary Sewa Sadan, New Rest House, Bhopal and on that occasion 17 different Kshatriya Organisations decided to merge in Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha.

A number of meetings of the national executives and other meetings were held at Swami Narayan Mandir Bela Road Civil Lines Delhi and Prachin Shiv Mandir Lakshmi Nagar Delhi for preparation of Centenary Celebrations.

On 24-25 August, 1997 a meeting of the national executive was held at Surat on the invitation of Sh. Tanvir Singh Jhala, President of ABKM Gujrat State. Besides this, a large number of meetings were held in Haryana, UP, Rajasthan and Delhi and many areas around Delhi. Most of the meetings were presided over by its National President Former Union Minister Yuvraj Dr. Digvijay Singh (Wankaner), along with the National Working President and Former Member Parliament, Sh Devi Singh Mandava, as discussed earlier, a vishal historic Kshatriya Sammelan consisting of about more than 5 lacs Kshatriyas celebrated the Centenary Celebration of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha on 19th of October 1997 at Red Fort New Delhi.

A historic national Kshatriya Sammelan was held on 08-11-1998 at Begam Hajrat Mehal Park Lucknow as mentioned earlier. A number of meetings were held in UP and around Lucknow for the preparation of the above said National Kshatriya Millan Samaroh.

In the year 1999, the meeting of the national executive committee were held at The Palace Wankaner, on the invitation of National President Maharaja Dr. Digvijay Singh Wankaner and another meeting on 24 June 2001 at Janpath Club Ahemdabad on the invitation of Sh. Parveen

Singh Jadeja, Former Minister Gujarat. On that occasion another meeting was held at Gandhi Nagar on the invitation of Shri Shankar Singh Vaghela, Honourable Chief Minister of Gujarat and in the same year Maharana Pratap Janam diwas was celebrated on 6th June at Ekta Bhawan Agra on the invitation of Sh Vishavnath Singh Chauhan proprietor of Swami Sofital Hotel, Agra.

Another meeting was held on 10 January 1999 at Indore and on 19-10-1999 a historic meeting of the national executive was held at Mandawa Palace Rajasthan on the invitation of the National Working President and Former Member Parliament Sh. Devi Singh Mandawa.

A number of meetings of national core committee and national executives were held at Gwalior, Bhopal, Delhi (15-16 January and 14 September) and at Hari Palace, Jammu on 24-25 June 2000 on the invitation of Thakur Diwakar Singh and a meeting of the national executive was held at Patna on the invitation of Thakur Devender Singh, President, ABKM Bihar.

A meeting of national executive committee was held on 18-19 August 2001 at Gouri Shankar Mandir Pinjore Haryana under the presidentship of Yuvraj Dr. Digvijay Singh (Wankaner), along with its National Working President Thakur Bhola Singh. A number of meetings were held at Delhi and many other places in the year 2001.

A meeting of national executive committee was held on 16/17 June 2002 at Amar Kshatriya Sabha Bhawan, Jammu on the invitation of its President K.S. Jamwal. Another Annual meeting of national executive was held at Pathankot Punjab on 10 March 2002 on the invitation of Thakur Rajbir Singh. Another meeting of national executive of ABKM was held on 21st April to 24th April 2002 at Vishakapatnam, Shrishelam and Vijay Nagar and Hyderabad in Andhra Pradesh on the invitation of Janki Ram Raju & Sh J.P Singh, IAS, retired, President ABKM Andhra Pradesh. Yuvraj Dr. Digvijay Singh (Wankaner) presided over the meeting. In the year 2003 a meeting of national core committee was held on 10th August 2003 at Kanota House Jaipur on the invitation of Raja Mohan Singh Kanota. Again a meeting of national core comiitee was held at palyam on the invitation of Sh Janki Ram Raju of Kshatriya Sewa Samiti and Raja Palayan. Another meeting of the national executive was held at Jagdish Nagar Chamarhara Mehnar Vaishali on the invitation of Sh. Ajit Singh, Former Member of Parliament on 11-12 October 2003.

A number of meetings were held at Jaipur (March 2004) Rajasthan, Patna, Delhi, UP. Veer Kunwar Singh Jayanti was celebrated on 23-04-2006 at Krishna Memorial Hall Patna. Maharaja Digvijay Singh National President, Thakur Bhola Singh National Working President, Sh. Prabhu Nath Singh Member Parliament,

Sh. Sita Ram Minister Bihar, Sh. Ram Bilas Paswan, Former Union Minister, Sh. R.N. Singh, Thakur Devender Singh, Sh. Ajit Singh, Former member Parliament and many other prominent leaders were present on that occasion. Therefore in 2005-06 and 2007 a large number of meetings were held in different parts of the country (Mumbai on 3rd May 2005) and Patna & many other places.

A meeting of the national executive was held on 8,9,10 August 2003 at Playam (Tamilnadu) on the invitation of Sh. Janki Ram Raju and Raja Playam. A meeting of Pratinidhi Sabha of ABKM

was held on 27 November 2001 at Delhi and Maharaja Dr. Digvijay Singh and the executives were re-elected unanimously.

Similarly a number of meetings were held in 2001-2003 at Raja Ka Talab, Sinhuta, Solan Rajgarh, Una and Shimla in Himachal Pradesh. Raja Veerbhadar Singh, Honourable Chief Minister of Himachal, Smt. Asha Kumari, Smt. Chanderesh Kumari and Thakur Kaul Singh Ministers of Himachal and Vijay Singh Mankotia, MLA were present in the meeting of national core committee at Shimla.

A meeting of national core committee was held at Patna on 04 May 2008 on the invitation of Smt. Lovely Anand Former Member Parliament in which national core committee vehemently supported Sh Anand Mohan Former Member Parliament who was involved in murder case and demanded that no injustice should be done to him.

On 6th of June 2008 Maharana Pratap Jayanti was celebrated at Jagadhari in which Maharaja Paharpur was the Chief guest and Sh Mahender Singh Tanwar National Working President presided over the function.

A number of meetings were held at Lucknow, Phagwara, Udaipur, Patna, Kurukshetra, Bhiwani and Omkareshwar (MP) (26-27 July 2009) and at many other places in the country.

National Convention of ABKM at Lucknow in 2010

On 16th/17th /April 2010, a National Convention of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha was held at Darul Safa, Lucknow. Maharaja Dr. Digvijay Singh (Wankaner), Former Union Minister was re-elected as National President and Sh Mahender Singh Tanwar as National Working President of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha for a period of five years. Sh R. N. Singh (Kanpur UP) and Sh. Prempal Pundir (Mumbai) were elected Gen. Secretaries. Besides a national executive committee was constituted on that occasion. Thakur Fakir Singh Bhatti (Panchkula) Haryana was the National Election Officer cum National General Secretary Sh. Dinesh Pratap Singh MLC, & President of ABKM Uttar Pradesh was the main organizer of the above said national convention. On 26-27 June 2010 a meeting of ABKM was held Hotel Sunshine, Una Himachal Pradesh on the invitation of Major General Rtd. and Senior National Vice President Sh Bikram Singh and Thakur Sarabjit Singh President of Himachal Pradesh. In the month of April 2010, two meetings of the national office bearers were held at Delhi in connection with the functioning of functional office at Delhi, In the month of July a meeting of national executive committee was held at Motihari.

The national executive led by Maharaja Dr. Digvijay Singh (Wankaner), arrived the place from where father of the nation Mahatama Gandhi launched a historic movement against British Government in March 1917 and resolved at that historic place to launch a nationwide movement/ nationwide rath yatra from Kashmir to Kanyakumari for implementing reservation on economic basis rather than on caste basis. A historic vishal rally consisting of more than 20000 Kshatriyas was also held under the presidentship of its National President Maharaja Dr Digvijay Singh wanakaner. On this occasion a large number of M.Ps, Ministers, Ex. Ministers, M.L.As and prominent Kshatriya leaders were present. Sh Jagdambika Pal Former Chief Minister of U.P was the

Chief Guest. This function was organised by the state president Thakur Devender Singh, Lal Babu, Smt. Kiran Singh and other state leaders.

A large number of meetings were held at Delhi, Haryana, Punjab, Himachal, and other places for the preparation of nation wide rath yatra for implementing reservation on Economic basis. As discussed earlier the meeting of ABKM was held at Delhi on 13-03-2011 and a Dharna at Rajghat Delhi was held on 12-03 2011.

On 18-8-2011 a Dharna at Jantar Mantar Delhi was held demanding reservation on economic basis under the president ship of its National President Dr Digvijay Singh (Wanakaner) . In the year 2011 another meeting of national executive was held at Jaipur, which was presided over by Maharaja Dr. Digvijay Singh (Wankaner). Smt. Rani Mahender Kanwar, Col. Randhir Singh prominent Kshatriya leaders of Rajasthan and national office bearers were present in the meeting.

As discussed earlier a week long historic Dharna for the above said demands was staged at Jantar Mantar New Delhi from 28-12-2011 to 02-01-2012 in which the prominent leaders of Aggarwal, Brahmin, Punjabi and other General Castes were present.

A meeting of the national core committee were held at Kurukshetra and Chandigarh in the year 2012. A meeting of the national core committee was held at Ujjain Madhya Pradesh on 18-19 July 2012 under the president ship of Sh Mahender Singh Tanwar, National Working President of ABKM and Yuvraj Kesari Singh (Wankaner), graced the occasion on the invitation of Sh Vijay Singh Parihar President of Madhya Pradesh and Sh Anil Singh Chandel National Gen. Secretary. On this occasion prominent Kshatriya Leaders and national office bearers were present and it was decided to convene a national convention on the invitation and asking of Sh Prempal Pundeer national Gen. Secretary at Shirdi on 21-22 August 2012.

The national convention of ABKM which was held at Shridi was presided over by Sh. Mahender Singh Tanwar National Working President and National Sant Bhaiu Ji Maharaj was the Chief Guest. As the quorum of the convention was not proper no further decision except the demand of reservation could be taken. Shri Shashi Kant Panwar, Senior National Vice President and other national office bearers were present. Prthvi Raj Chauhan Jayanti was celebrated at 18 June 2013 NDRI Karnal and Sh Mahender Singh Tanwar, National Working President presided over the meeting.

Dharna in favour of Gen. V. K. Singh, Chief of the Army Staff

Akhil Bhartiya Kshatirya Mahasabha strongly protested through out north India against the ill treatment and injustice done to the then Chief of the Army Chief of India General V.K. Singh. A Vishal Dharna and demonstration was organized by ABKM on 6th May 2012 in support of General V.K. Singh and for the cause of eradication of rampant corruption in the country. Yuvraj Kesri Singh (Wankaner), participated in the Dharna and demonstration and a memorandum to the President of India was submitted to this effect.

Movement against the Telecast of Jodha Akbar

Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha launched a nation wide movement against Jodha Akbar serial telecast and a Vishal Rally was arranged at Chandigarh where about 10000 persons participated and thousands Kshatriya were arrested and hundreds out of them were badly injured by the police Lathi Charge and a criminal case FIR no 271 dated 17-07-2013 under section 148, 149, 307, 352, 427, 332, 353 IPC, Police Station Sector 11 Chandigarh was registered against the National Working President Sh. Mahender Singh Tanwar, Sh. Sukhdev Singh Rana, President, Union Territory Chandigarh, Dr. Vishavraj Karnal and two other leaders of ABKM on that day. The national office bearers held a number of meetings during a fortnight around Chandigarh for the preparation of the above said meeting. Again a Vishal Rally, Dharna and demonstration was organized on 18-08-2013 by ABKM at Jantar Mantar New Delhi against the Jodha Akbar telecast. More than 15000 people participated under the leadership of Former Union Minister and National President Maharaja Dr. Digvijay Singh (Wankaner). Hundred of peoples were injured in the police Lathi Charge and a criminal case FIR No 142 Parliament Street New Delhi dated 18-08-2013 under section 148, 149, 352, 427, 332, 353 PS and many other sections of IPC was registered against Sh. Mahender Singh Tanwar, National Working President of ABKM along with 20 persons.

Sh. Mahender Singh Tanwar was arrested along with 20 persons by police at Parliament Street New Delhi and was released on bail by the honorable court. The above said cases are still pending in the courts. Similarly meetings and demonstrations were held at Mumbai, Ujjain, Indore, Lucknow, many parts of Haryana and through out the country in this regard. A delegation of ABKM led by Sh. Mahender Singh Tanwar, National Working President met Sh. Manoj Tiwari Minister for Information and Broadcasting and consequently many objectionable scenes were removed from the serial.

Foundation Day of ABKM, 2013

Akhil Bhartiya Mahasabha celebrated its 116th Foundation Day on 19 October 2013 at the premises of Rajput Students Aid Society Sector 25 Chandigarh. Thakur Ram Lal Former Minister Himachal and Rana K P Singh Former Minister Punjab graced the occasion as Chief Guests.

Samman Samaroh of 36 Kshatriya MLA's of Bhopal (M.P.) in 2014

A Samman Samaroh to welcome and honour the newly elected 36 Rajput MLAs was held by the youth wing of ABKM Madhya Pradesh at Bhopal and Sh. Mahender Singh Tanwar National Working President was the Chief Guest along with Sh. Anil Singh Chandel national Gen. Secretary and Sh. Vijay Singh Parihar President ABKM, Madhya Pardesh presided over the function.

In the year 2014 Maharana Pratap Jayanti was celebrated at Khargaon, Maheshwar, Jaipalpur and Indore. National Working President Sh Mahender Singh Tanwar was the Chief Guest. Similarly a meeting of national core committee was held at Lucknow under the presidentship of Maharaja Dr. Digvijay Singh (Wankaner) .

A historic state level Maharana Pratap Jayanti was organised at Karnal in the year 2015. Sh. Manohar Lal Khattar Chief Minister Haryana was the Chief Guest and Maharaja Raghubir Singh Sirohi presided over the function. Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha, Rajput Pratinidhi Sabha Haryana led by Col. Devender Singh Veer Chakkar, State President of the Sabha and other Rajput organizations organised the above said Sammelan.

In the year 2015 a large number of meetings of ABKM were held at (Wankaner), Delhi, Ujjain (National Convention) Udaipur, Buraill (Chandigarh). Yuva Samelan at Radaur, Sompur Bihar, Pinjore, etc. Maharaja Raghubir Singh Sirohi was the Chief Guest at Yuva Samelan Radaur Haryana.

A meeting of the National Core Committee of ABKM was held on 28-29 October 2015 at Udaipur, Rajasthan on the invitation of Rao Kamalendra Singh Batheda, Ex. MLA. The meeting was presided over by Maharaja Dr. Digvijay Singh Wankaner, National President of ABKM. Maharaja Raghubir Singh Sirohi, Rajasthan, Sanrakshak and Sh. Shashi Kant Panwar, National Vice President, ABKM, Maharani Mahinder Kanwar, Col. Randhir Singh, Mahender Singh Tanwar, Vijay Singh Parihar and Sh. Anil Singh Chandel participated in above said meeting.

Dharna at Jantar Mantar on 24th November 2015

A Dharna demanding reservation on economic basis rather than on caste basis was held at Jantar Mantar New Delhi. Shri Bhim Singh Ex MLA and the Founder President of Panther Party Jammu & Kashmir and prominent Kshatriya leaders from Haryana and Delhi along with national office bearers were present there. Sh. Mahender Singh Tanwar National Working President presided over the function. Sh. Vijay Singh Parihar, President, M.P. ABKM, Sh. Anil Singh Chandel, National Gen. Sec. ABKM, Ms. Anjana Kanwar, President, Delhi, ABKM were also present.

In the year 2016 a meeting of the national core committee was held on 10th January 2016 at Jammu (J&K). It was organised by the Senior National Vice President Gulchain Singh Charak Former Minister J&K. Maharaja Raghubir Singh Sirohi was the Chief Guest and General G.S. Jamwal, General Shamsheer Singh, more than a dozen Rtd. Brigadiers Cols. and a large number of prominent Kshatriya leaders of J&K were present. Similarly a number of meetings were held at Una, Chamunda, Distt. Mandi, Haroli, and Bathu in Himachal Pradesh in 2016. On 7th of June 2016 a Vishal Samelan was organised by ABKM district Shajapur Madhya Pradesh at Shajapur. Raja Digvijay Singh Former Chief Minister Madhya Pradesh was the Chief Guest and Sh Mahender Singh Tanwar, National Working President of ABKM presided over the function.

National Convention of ABKM at Ujjain in 2015

A national convention of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha was held on 18-19 April 2015 at Ujjain and a national executive was unanimously elected Maharaja Dr. Karan Singh of J& K, Maharaja Gaj Singh of Jodhpur, Raja Digvijay Singh Former Chief Minister Madhya Pradesh, Maharaja Raghubir Singh Sirohi and Sh. Gulchain Singh Charak Former Minister J&K and Former General Secretary AICC, were unanimously elected as Sanrakshak. And Maharaja Digvijay Singh

(Wankaner), as National President and Sh. Mahender Singh Tanwar as National Working President. Sh. R. N. Singh of Kanpur and Sh. Anil Singh Chandel of Ujjain (MP) were unanimously elected as General Secretaries. It was also unanimously resolved to maintain the previous national executive as such.

After the Centenary Celebration on October 19, 1997, the formation of different Mahasabhas using the name of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha led to fracture the solidarity and unity of the community and brought down the image of the Mahasabha in India & abroad. It looks to be a manoeuvre to buttress political ends if so it may not be conducive to better the cause of the Kshatriyas. Moreover it runs contrary to the spirit underlying the objects enshrined in the constitution of the Mahasabha.

The illegal formation of the so called Mahasabha with similar name of Body replacing in such a covert manner sent a wrong message in Kshatriya Samaj through the country. There is no legal validity of setting up a rival sabha and what is its moral righteousness, since it has seemingly been brought in to being without complying and going through processes laid down in the constitution of the Mahasabha as long as it is in force and not abrogated. It is nothing but a malicious propaganda aimed at vitiating the moral fabric of the community known for its loyalty and chivalry. There is no constitutional and legal validity of setting up a rival sabha using the same name. This is nothing but a betrayal by creating fudged up and forged papers with connivance of those who hitherto were swearing by their loyalty to Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha.

Formation of parallel Sabhas sends a wrong message to the entire nation and causes serious doubts in the minds of the Kshatriyas all over.

The need to strengthen unity and solidarity of the Kshatriyas may not be overemphasized. This is no sermon but a simple home-truth. Our Community suffers from acute penury and lacks avenues of job-oriented education thus denying its youth the benefits of economic progress.

The office bearers of the rival Sabhas never attended the meeting of the ABKM and simply illegally floated the parallel organisation at their convenient places without informing the National President and other office - bearers of the ABKM using the name of more than 120 years old ABKM for the reasons best known to them. The Centenary Celebration on the ABKM on 19 November 1997, National Kshatriya Milan Samaroh, Lucknow, 15 October 1998, National Kshatriya Milan Samaroh, Bhopal, 15 October 2000, the movement against caste-based reservation demanding reservation on economic basis including historical nation wide Rathyatra, a number of Dharnas & demonstrations at Jantar Mantar New Delhi and a movement against the telecast of Jodha Akbar at National Level could be held only under the dynamic leadership of Former Union Minister and National President of ABKM . Maharaja Dr. Digvijay Singh Wankanaer.

ABKM has played a vital role in Lok Sabha and Assembly elections for arranging party tickets of different political parties for Rajput candidates, as a result of which more than 100 Rajputs are members of Parliament of India today and a large number of Rajputs are members of legislative assemblies of different states.

The ABKM for the first time launched the movement against caste based reservation and raised slogan 'reservation should be on economic basis rather than on caste basis'. Now we see there is a nation wide debate everywhere in favour of reservation on economic basis.

Due to continuous and untiring efforts of Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha there is a lot of awakening and enthusiasm in Kshatriya Samaj at national level in general and among Youths in particular and Mahasabha is doing its best to fulfil the expectations and inspirations of the Kshatriya Samaj through out the country. As we all know a Kshatriya has always faithfully resisted and fought against adharma, falsehood, injustice, atrocities, cunningness and all sorts of exploitations. Now time has come for us and particularly youth to be leader and to lead the samaj and strengthen the organization for the overall development of our community through out the country otherwise coming generations will not forgive the present leadership.

However a positive trend is developing of working for effective coordination not only to support each other but also to create the needed infrastructure. New educational institutions, boarding houses, kanya chhatarwas, guest houses, pilgrim lodges, heritage hotels comprising of old palaces and forts, directories and research institutions have come up and more will certainly be setup in the years to come .

The Kshatriyas are now coming up in every vacation and it is a very welcome sign to see certain dynamic families doing exceedingly well in the field of industries, trade, building construction, administration and civil services, transport business and most of all in disciplines which are traditionally theirs such as Army , Navy and Air Force and Police.

As a fall out from the centenary celebrations of Oct 19, 1997, a nation wide Rath Yatra demanding reservation of economic basis rather than on caste basis a massive nation wide movement and demonstrations against Jodha Akbar TV serial and fight against the rampant corruption in the country and continuous fight and struggle against any sort of victimization or injustice with Kshatriya Community throughout the country including the case of General V.K. Singh, the than Chief of the Army Staff. A new spirit of optimism has grown amongst the Kshatriyas whereby the leadership qualities they have inherited shall be put to test and they shall come out with flying colours.

FORMER PRESIDENTS OF THE AKHIL BHARTIYA KSHATRIYA MAHASABHA TILL TODAY

1. 1897 Raja Balwant Singh ji of Awagadh (U.P)
2. 1902 Maharaja Sir Ganga Singh ji of Bikaner (Rajasthan)
3. 1903 Maharaja Sir Partap Singh ji, Idar (Gujrat)
4. 1905 Raja Kaushal Singh ji of Manjhola(U.P)
5. 1907 Raja Partap Bahadur Singh ji Partapgarh (U.P.)
6. 1920 Maharaja Dalip Singh ji of Sailana (M.P)
7. 1922 Maharajadhiraj Shri Nahar Singh ji of Shahapura (Rajasthan)
8. 1929 Maharaja Sawaj Jai Singh ji of Alwar (Rajasthan)
9. 1940 Hon'ble Kumar Sir Shri Vijay Prasad Singh Ji Rai (Bengal)
10. 1941 Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singhji of Dumraon (Bihar)
11. 1942 Maharaja Kumar Vijay Anand of Motihari (Bihar)
12. 1945 Raja Kamakhya Narayan Singh ji of Ramgarh (Bihar)
13. 1946 Maharaja Yadvendra Singh ji Judeo of Panna (M.P)
14. 1947 Maharaja Tej Singh ji of Alwar (Rajasthan)
15. 1948 Col. Maan Singh ji Bhati of Jodhpur (Rajasthan)
16. 1953 Raja Kamakhya Narayan Singhji of Ramgarh (Bihar)
17. 1955 Shriman Babu Ram Narayan Singhji of Hazari Begh (Bihar)
18. 1960 Maharawal Lakshman Singhji of Dungarpur (Rajasthan)
19. 1989 Yuvraj Dr. Digvijay Singh ji of Wankaner (Gujarat)

Future Programme of the Akhil Bhartiya Kshatriya Mahasabha

1. Setting up of Centre in Delhi where there would be housed a research centre of Kshatriya history with a museum, a guest house, a temple having family goddesses (Kuldevis) of all the clans and Kuls, an auditorium and a training centre.
2. From this centre, effective coordination be established with all Kshatriya organizations in India and abroad through the modern means of cyber-media.
3. Launching of a monthly publication and Directories for each State.
4. Promoting setting up of educational institutions, technical institutions, guest houses and lodges by giving necessary incentives through local Kshatriya organizations.
5. Organizing training programmes to build up a Kshatriya cadre of Yuva Sanghs.
6. Setting up a and supporting Kshatriya Mahila Morchas.
7. Preventing Kshatriyas contesting elections against each other and losing the seat to another.
8. Putting an end to caste-based reservation and thus paving way for the one based on financial condition.

